

समता के प्रवर्तक

सद्गुरु महात्मा मंगत राम जी

एक संक्षिप्त जीवन परिचय एवं चुनिंदा आध्यात्मिक निर्देश

दीनानाथ सराफ



संगत समतावाद

महामन्त्र

ओम् ब्रह्म सत्यं निरंकार अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक कल्याणमूर्त परमेश्वराय नमस्तं

शब्दार्थ

- | | | |
|-------------------|---|------------------------------|
| 1. ओम् | - | सर्व रूप ओंकार |
| 2. ब्रह्म | - | अनन्त शक्ति परम तत्व |
| 3. सत्य | - | सदा एक रस |
| 4. निरंकार | - | आकार से रहित |
| 5. अजन्मा | - | जन्म से रहित |
| 6. अद्वैत | - | केवल रूप |
| 7. पुरखा | - | परम चेतन सत्ता |
| 8.9 सर्वव्यापक | - | सब में व्याप्त |
| 10.11 कल्याणमूर्त | - | परमानन्द स्वरूप और सरोत |
| 12. परमेश्वराय | - | ऐसे परम ईश्वर, बड़े मालिक को |
| 13. नमस्तं | - | नमस्कार हो । |

त्रयोदस अक्षर मंत्र यह सर्वसिद्धि दातार ।

जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार ॥

जन्म-जन्म जाय भरमना, प्रभ चरण पाय विश्वास ।

मोह माया संकट मिटे सब कारज होवे रास ॥

महिमा सत् स्वरूप की सब अक्षर पहचान ।

चार वेद और स्मृति, सब का सार निद्धान । (‘ग्रंथ श्री समता प्रकाश से’)

मंगलाचरण

नारायण पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमो नमो नित चरण को, जो सब आधार हजूर ॥

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरणी करो डण्डौत।
सत् शरधा से पूजिये, रख सतगुरु की ओट ॥

दुविधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जय कार ॥

साचा ठाकुर सब समराथा, अपरम शक्त अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरणी बलिहार ॥

सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुरु मिले दयाल ॥

बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माईं।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं ॥

प्रस्तावना

यह संक्षिप्त कथा वर्तमान युग के एक महान सन्त सद्गुरु मंगत राम जी की है। इनका जन्म सन् 1903 में गंगोठिया ब्राह्मणा नामक गांव जिला रावलपिण्डी में हुआ। आप बाल्यकाल से ही सादगी, विनम्रता और कुशाग्र बुद्धिमता संयम एव भक्ति की प्रतिमूर्ति थे। तेरह वर्ष की स्वल्पायु मे ही आत्म साक्षात्कार हुआ। इसके पश्चात् आजीवन आप ने अपना समय सत सिमरन, सम पद शान्त रहनी, निष्काम सेवा ईश्वर महमा और लाखों लोगो को सदाचारी जीवन तथा सत्मार्ग बोध कराने में व्यतीत किया। उन्हें सर्वत्र तथा प्रत्येक जीव में ईश्वर की ज्योति दिखाई देती थी। आप समता अथवा अनुरूपता और समानता की जीती जागती मूर्ति थे।

प्राचीन काल से समय-समय पर और स्थान-स्थान पर ईश्वर के प्यारे और सत् विश्वास वाले सत्पुरुष पैदा होते आए हैं, जिन्होंने आत्मदर्शन और योगारूढ़ अवस्था की प्राप्ति के साथ-साथ अन्धकार में भटकते हुए मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाया यह जीवन क्या है, संसार क्या है और सत् किसे कहते है इन मौलिक आध्यात्मिक प्रश्नों पर उन्होंने अपने-अपने ढंग से प्रकाश डाला है। उनका पवित्र जीवन और अमूल्य शिक्षा जन-जन का पथ प्रदर्शन करता रहा है। वे सत्पुरुष कहीं भी हुए हो, उनके भावो वाणी एवं प्रवचनों का प्रभाव सारी सृष्टि पर पड़ता है।

सत्य एक है। विभिन्न धर्मों के प्रवर्तकों, अवतारों और सत्पुरुषों ने उसी सत्य को ब्रह्म निर्वाण, आसमानी बाप, अल्लाह, एक ओंकार, समता तत्व इत्यादि शब्दों से अभिहित किया है। सत्य की व्याख्या के अतिरिक्त उन्होंने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों और विकृत परिस्थितियों को सुधारने की ओर भी ध्यान दिया।

सद्गुरु महात्मा मंगत राम जी का जन्म ऐसे समय हुआ जबकि पंजाब क्षेत्र और सारे देश की दशा अच्छी नहीं थी। कई प्रकार के सम्प्रदाय पन्थ और मत-मतान्तर तो थे ही, विदेशी शासन ने पारस्परिक विरोध और बढ़ा दिये थे। देश के लोग जादू-टोने, बहुत से वहमों, भ्रष्ट रीति-रिवाजो और विषय वासनाओं में ग्रसित थे। जगह-जगह जाकर लोगों को नश्वर शरीर के

यथार्थ शान्ति और उसकी प्राप्ति के साधन से अवगत किया और अनेक प्रकार के भ्रमों और अन्य बुराइयों एवं गलत धारणाओं की ओर जनता का ध्यान आकर्षित कर उनका समाधान बतलाया ।

बचपन से ही महात्मा जी की सम्पूर्ण वृत्ति विचारधारा और भक्ति परमेश्वर पर केन्द्रित थे। निष्कामता, निर्मानता, उदासीनता, निष्चलता और परोपकार आपके स्वभाव के अभिन्न अंग बन चुके थे। आपकी बहुमूल्य शिक्षा "श्री समता प्रकाश" और "श्री समता विलास" नामक दो ग्रन्थों में उपलब्ध है। यह जीवन के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान देती है। ईश्वरीय वाणी और अनमोल वचनों का संग्रह- ये दोनो ग्रन्थ निश्चित ही समस्त मानव जाति के लिए शान्ति और कल्याण के स्रोत है। पूर्ण सन्तो के आशीर्वचन प्रभु प्राप्ति के मार्ग का भेद खोलते है। इस पर सद्गुरुदेव मंगत राम जी का यह भी कमाल समझिए कि आप मानव जीवन के हर मोड़ पर प्रकाश स्तंभ की भान्ति दृष्टिगत होते है। जीवन में जीवन शक्ति की पहचान और इस जीवन को सुगन्धित बनाने के लिए आपने अत्यन्त सरल शब्दों में प्रेरणा दी है।

4 फरवरी 1954 को शरीर त्यागने से पूर्व श्री सत्गुरुदेव का अन्तिम संदेश था इनका मिशन पूरा हो चुका है। वाणी प्रगट हो चुकी है। जैसा कोई रोगी होगा अपने रोग का इलाज तलाश कर लेगा ।

यह लघु पुस्तिका एक अनूपम सत्पुरुष की संक्षिप्त कथा और उनकी अनमोल वाणी और सत् वचनों में से लिये गये कुछ मोतियों का संचन (संग्रह) है। आशा है कि जिज्ञासु पाठकगण इस महान सन्त के जीवन और शिक्षा के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक होंगे।

दीनानाथ सराफ

अक्तूबर, 1990

मुखी सेवादार संगत समतावाद

नोट - यह पुस्तिका दास की उर्दू किताब का अनुवाद है, इस प्रयत्न मे प्रेमी भाई राम लाल जी गुप्ता और हरबन्स लाल जी चावला का आभारी हूँ।

विषय-सूची

	पृष्ठ सं०
1. संक्षिप्त जीवन-परिचय	1
● अनोखा बचपन	1
● आत्म साक्षात्कार और सेवा भाव	4
● जीवकोपार्जन के साथ-साथ भक्ति	9
● भ्रमण भक्ति और लोक सेवा	15
2. समता महत्व और आदेश	25
3. असली खुशी, शाश्वत शान्ति	29
4. आध्यात्मिक उन्नति के मुख्य साधन	32
5. सदाचार	39
6. परम गति योग	45
7. विश्व शान्ति सन्देश	49
8. कुछ और चुनिन्दा उद्धरण	51
(क) ग्रन्थ श्री समता प्रकाश में से	51
(ख) अमृत उपदेशो से	69
(ग) प्रश्नोत्तरी रूप में	82
9. आरती	91

ॐ

समता अपार शक्ति

ओम् ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

1. जीवन परिचय

• अनोखा बचपन

जन्म - वह वंश बड़ा भाग्यशाली है और वह भूमि तो निश्चित ही पावन जहाँ पर प्रभु का प्यारा पैदा हुआ हो। श्री मंगत राम जी एक बड़े शुद्धाचारी परिवार ने मंगलवार 9 मघर सं० 1900) विक्रमी तदनुसार 24 नवम्बर 1903 को ग्राम गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहूटा जिला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में अवतरित हुए।

पूर्वज - आपके पिता माननीय पं० गौरी शंकर जी का जीवन बड़ा सदाचारी था। वह रावलपिण्डी के धनी व्यक्ति सरदार सुजान सिंह के मुखत्यारे आम (सर्वे सर्वा अधिकारी) थे। परन्तु नौकरी के कर्तव्य निभाते हुए भी उनका अधिकतर समय ईश्वर की याद में गुजरता। आपके पितामहा पं सुन्दर दास जी बड़े ईश्वर भक्त थे। उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग सुनसान और घने जंगलों में ईश्वर की याद में गुजरा। उनकी आयु 125 वर्ष थी। आपकी माता श्रीमती गणेशी देवी एक सरल, सेवारत, भक्ति भाव युक्त देवी थी।

मंगत अभी छोटे ही थे कि उनके पिताश्री का देहान्त हो गया और उनका पालन पोषण मुख्यता आपकी माता द्वारा हुआ। बड़े भाईयों की देख-रेख भी साथ थी। आपकी माता जी का आप से बड़ा प्यार था। बाल्यकाल से ही आपके असाधारण शान्त स्वभाव को देख देख कर उनको बहा अचम्भा होता था।

मनोवृत्ति जब आपकी उम्र पांच वर्ष की ही थी आप रात्रि के समय उठ कर बिस्तर पर बैठ जाते। मां की आंख खुलती तो क्या देखती कि प्यारा मंगत बैठा हुआ है। उसके मन में ख्याल आता कि शायद बेटा डर के मारे उठ कर बैठ गया है। कहती "मंगत क्यों बैठ गए हो सो जाओ लाल" । आगे से

उत्तर मिलता “मां कुछ नहीं ऐसे ही बैठा हूँ कोई बात नहीं मां।” यह कह कर काफी देर तक बैठे रहते (ईश्वर की याद में) और फिर सो जाते।

पाठशाला - पांच वर्ष की उम्र से मा ने आपका डेरा खालसा की पाठशाला में दाखिल करवा दिया जो कि गंगोठिया गांव से तीन मील की दूरी पर थी। वहां पर चौथी कक्षा तक पढ़ें। मां प्रातः काल पराठें बना दिया करती कि बच्चा स्कूल में दोपहर को खा सके किन्तु भगत दूसरे निर्धन बालकों की सूखी रोटियां देख कर पराठे उन्हें दे देते और उनकी सूखी रोटिया स्वयं खाकर खुश होते ।

एक दिन मां ने जरी का नया कोट पहना कर पाठशाला भेजा। अपने एक सहपाठी को फटे वस्त्र पहने देखकर तुरन्त अपना कोट उतार के उसे पहना दिया और उसका कोट स्वयं पहन लिया। स्पष्ट है कि बचपन से ही आप के स्वभाव में सादगी, बलिदान और दूसरों को प्रसन्न करने का कितना अधिक भाव विद्यमान था।

विवेकशीलता और भक्ति

आप बड़े कुशाग्र बुद्धि थे। पाठशाला का पाठ वहीं याद हो जाता। कक्षा में प्रथम आया करते थे। पाठशाला से लौटते समय अकसर रास्ते में रुक जाते और पुस्तकें एक ओर रख कर ईश्वर की याद में बैठ जाते। देर से घर लौटते तो मां सीधा घर आने को कहती। आखिर मां को ख्याल आया कि संभवतः इनके दिमाग पर किसी भूत प्रेत का असर है। वह कभी मौलवियों से तावीज लाती कभी पंडितों से पूछती किन्तु सब व्यर्थ । लगभग आठ वर्ष की अवस्था में आपने आधी रात को उठ कर गांव के निकट एक गहरी खाई में बहती हुई नदी के किनारे एक बड़े पत्थर पर अपने प्रियतम के ध्यान में बैठना शुरू कर दिया। इतनी छोटी उम्र में घर और नींद के आराम को त्याग एक निर्जन स्थल पर जाना एक साधारण कार्य न था ।

गंगोठियां के निकट पीर ख्वाजा नामक एक घना जंगल था। प्रायः

लोगों को उसमें आने का साहस नहीं होता था। वे पीर को खुश करने के लिए बली दिया करते थे। इधर मंगत राम जी थे जो बचपन में भी उस जंगल में जाने से न घबराते। मां समझाने की कोशिश करती, परन्तु उसकी बात को आप हंस कर टाल देते। कहते "मां, डरा न करो इन्हें पीर ख्वाजा कुछ नहीं कहता।"

लाट पादरी - पांचवीं कक्षा से आठवीं तक कल्लर गांव के स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। यह स्थान गंगोठिया से लगभग छः मील की दूरी पर था। आपकी बड़ी बहन श्रीमती करतार देवी उसी गांव में विवाहित थी। आपने बहन के घर रह कर पढ़ाई की। उनका अपने बहनोई साईं दास जी से भी गहरा प्रेम था। पाठशाला में आपकी प्रभु प्रेम में लगन उच्च कोटि के सदाचार और विवेकशीलता को देख कर अध्यापकगण प्रायः आपको सदाचार पर बोलने के लिए कहा करते। यही कारण था कि वहां पर आपको लाट-पादरी (ईसाइयों का धार्मिक गुरु) के नाम से पुकारा जाने लगा।

एक बार जब आप कल्लर स्कूल में पढ़ते थे तो पाठशाला का निरीक्षण करने इन्सपेक्टर ने आना था। मुख्य अध्यापक ने सब बालकों को निरीक्षण के दिन बढिया वस्त्र पहन कर आने को कहा। आप रोजाना की भांति सादा वस्त्रों में पाठशाला आये। इस पर अध्यापकगण ने आपत्ति की तो आपने कहा "विद्यार्थी का सम्मान अच्छी पढ़ाई और नेक चलन से होता है न कि चमकीले भड़कीले वस्त्रों से। इन्सपेक्टर महोदय इनकी अक्ल देखेंगे या कपड़े"।

योग्यता और आध्यात्मिक चर्चा आप एक अच्छे विद्यार्थी की तरह पाठशाला से लौटते ही पढ़ाई का काम करते। इसमें उन्हें अधिक समय न लगता। स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र थी जो बात एक बार पढ़-सुन लेते उसे न भूलते थे काम समाप्त करके एकान्त में बाहर चले जाते और सायंकाल लौटते उस के उपरान्त प्रायः आप और पं० साईं दास जी आपस में आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा में व्यस्त रहते ।

● आत्म साक्षात्कार और सेवा भाव

चालीसा

मंगत बचपन से ही प्रभु के अथाह प्रेम के रंग में रंगे हुए थे। सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे कि आपने अपने बहनोई से चिल्ला काटने की चर्चा की और उनसे स्वीकृति ले ली। इनकी बहन को अपने मायके गंगोठिया भेज दिया गया। उसके बाद आपने चालीस दिन का चिल्ला काटा अर्थात् चालीस दिन तक लगातार रात-दिन प्रभु भक्ति में लगाए। तेरह वर्ष की अल्प आयु में चालीस दिन की अटूट तपस्या सरल कार्य नहीं थी। सभी लोग हैरान थे। चालीसा पूरा करने पर यद्यपि शरीर कमजोर हो गया तथापि चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेज झलकने लग गया था।

एक मोड़

आठवीं कक्षा में पहुंचते ही बहुत उदास रहने लगे और कहना शुरू कर दिया "इन्हें दूसरी पढ़ाई पूरी करनी है"। सन् 1916 के अन्तिम दिन थे। बड़े दिनों की छुट्टियों में पुस्तके आदि सारा सामान लेकर गंगोठियां पहुंचे। घर आये हुए अभी दो चार दिन ही हुए थे कि उदासी बहुत बढ़ गई। रोना और आहें भरना शुरू हो गया। अधिकाधिक अलग रहते। एक दिन शाम को जंगल पीर ख्वाजा में बैठे हुए थे कि अन्धेरा हो गया। पर घर लौटने को मन नहीं करता था। अन्त में मां का ध्यान आ गया और वहां से चल पड़े। रास्ते में एक दीवार पर आकर बैठ गये। इधर मां लैम्प लिए हुए आवाजें लगाती आ पहुंची। आवाज सुन कर उठ खड़े हुए। मार्ग में मां बहुत कुछ कहती रहीं। चुप-चाप सुनते रहे। ध्यान आया कि मां का सम्बंध भी कितना आश्चर्यमय होता है। बच्चे से मां को कितना स्नेह होता है। जब तक खा न ले, उसके गले से कुछ नहीं उतरता। जितना एक मां बच्चे से प्यार करती है, उतना प्यार यदि प्रभु से हो जाए तो काम बन जाए अच्छा ईश्वर जैसी तेरी आज्ञा।

आत्म साक्षात्कार

सर्दी उन दिनों जोरों पर थी। मां गांव की अन्य स्त्रियों के साथ पूर्ववत् चरखा कात रही थी। आप रजाई ओढ़ कर लेट गये। जब दूसरी स्त्रियां चली गईं तो उसने पूछा "मंगत तबीयत तो ठीक है ना, आज जल्दी क्यों लेट गए हो।" रजाई के अन्दर से ही जवाब दिया नींद आई हुई है। मां भी लेट गईं। थोड़ी देर के बाद उठ कर पास आकर बोली 'मंगत! बाजों की आवाज आ रही है, तू क्यों बैठा हुआ है, सोता क्यों नहीं उत्तर मिला 'माता जी, नींद नहीं आ रही है, सोने लगा हूँ। कोई बाजे साजे नहीं बज रहे है। स्वप्न देखा होगा"। उनके सामने फिर रजाई ओढ़ कर सो गए। मां के सोते ही फिर उठ बैठे। दो-तीन घंटे बीतने के बाद एक दम कई सूर्यो जैसी रोशनी हो गई। छत्तीसो प्रकार के राग रागनियां और ढोल बजने लगे बाहर की कोई सुध न रही। मां ने जोर से आवाज दी "मंगत यह प्रकाश कैसा है।" तब इतना ही कह सके "माता शानत रहो" आखें खोली तो बाहर से जग-मग रोशनी देखने में आई। देख कर नेत्र फिर बन्द कर लिए ताकि वह मस्ती बनी रहे फिर जोर से आवाज आई "मंगत यह रोशनी कहां से आई है" ? कहा "मां चुप होकर लेटती क्यों नहीं हो" इतना कहना था कि सारी माया लोप हो गई। नेत्र बन्द करके देखा तो वैसी ही मस्ती छाई हुई थी। फिर झट-पट उठ कर देखा, मां सो रही थी। बिस्तर छोड़ कर पीर ख्वाजा जंगल की ओर चल दिए। बाहर काली घटाएं छाई हुई थी। जंगल के अन्दर एक जगह थोड़ी लोई नीचे ऊपर करके बैठ गए। फिर न ठण्ड रही न अन्धेरा। प्रभु कृपा से सारी रात बीत गई। जब खुमारी (मस्ती) उतरी तो देखा कि काफी दिन निकल आया है। उधर ही स्नान कर घर पहुंच गए।

आगे माई भाग (आपकी चचेरी भाभी भागवन्ती) धूप में बैठी गीता पढ़ रही थी जैसे कि उनका नियम था। आप वहीं बोरी पर बैठ गए और भाभी से दिन का पाठ आरंभ से पढ़ कर सुनाने को कहा। वह सुनाने लग गईं। रात को जो महिमा देखी थी, वैसा ही विचार सुना। आप पहले बैठे

सुनते रहे। तत्पश्चात् आपके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। गीता अध्याय जब समाप्त हुआ तो आप उठ कर अन्दर चले गये। इतना कह गए "माता तू धन्य है। मां से इन विषय में कुछ न कहना"। कमरे में चारपाई पर बैठ गए। माई भाग के बहुत पूछने पर भी कुछ न बोले।

महामन्त्र

उस रात के तीसरे दिन पानी के किनारे खडु में बैठे हुए महामन्त्र के आरंभ के तीन शब्द "ओम् ब्रह्म सत्यम् प्रकट हुए। दूसरे दिन "निरंकार अजन्मा, अद्वैत पुरखा" और तीसरे दिन "सर्व व्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं"। प्रतिदिन एक कागज पर लिख लिया करते।

परमेश्वर को जैसा बालक भक्त मंगत राम ने अनुभव अर्थात् सत्स्वरूप के दिव्य प्रकाश को जैसा उन्होंने देखा, प्रभु प्रेमियों की ज्ञान प्राप्ति के लिए "महामन्त्र" के इन पवित्र शब्दों में बयान किया है। आगे चल कर इस "महामन्त्र" की महिमा आपकी वाणी ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के एक खण्ड में वर्णित है। वहां आप ने इस मंत्र के तेरह अक्षरों में से हर एक को विस्तार से समझाया है। पाठकगण कृपया महामन्त्र को मूल रूप में इस पुस्तिका के आरंभ में देखें।

यहां इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि यह "महामन्त्र" बड़ा प्रभावोत्पादक है। इसमें विशेष आध्यात्मिक शक्ति निहित है। सच्चे हृदय से बार-बार इसका पाठ करने और प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारंभ में इसका उच्चारण करना लाभप्रद एवं सहायक माना गया है।

अन्दर की आवाज़

आत्म साक्षात्कार के अनूठे अनुभव के पश्चात् प्रभु प्रेम का सागर आपके अन्दर ठाठें मारने लगा। एक विचार आया कि पूर्ण भगत के कुएं पर जो कि स्यालकोट (पश्चिमी पंजाब) में है, जा कर कन फटे योगियों में शामिल हो जाए। तदनुसार एक दिन रेल गाड़ी पर सवार हो गये। वजीराबाद गाड़ी

बदलनी थी, वहां आप गाड़ी से उतर कर स्टेशन के निकट लकड़ी की मण्डी में पड़ी गेलियों पर चादर बिछा कर विश्राम करने के लिए सो गए। प्रातः उठकर स्यालकोट वाली गाड़ी की बजाए दूसरी गाड़ी पर सवार हो गए और लाहौर पहुंच गए। स्टेशन के बाहर लाला मूलचन्द की सराय में विश्राम किया। वहां रात को अपने अन्दर से आवाज आई "तुम्हारा मिशन कनफटा साधु बनना नहीं बल्कि जनता को सत्य सदाचार और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाना है। अन्ध विश्वासों में फसे लोगों को सत्मार्ग पर लाना है और उन्हें तथाकथित साधुओं के चंगुल से छुड़ाना है। अपना निजी क्रियात्मिक जीवन पेश करके उनका सुधार करना है और अज्ञानता की बाढ़ में डूबते हुए जीवों की रक्षा करनी है"।

इस आंतरिकवाणी को सुनकर आप लाहौर से गंगोठिया लौट आए और वहां से कल्लर जाकर फिर पढ़ाई शुरू कर दी।

सेवा – आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे कि एक बार निरीक्षण के दौरान - इन्स्पेक्टर महोदय ने लड़कों से प्रश्न किया कि खिद्यत (सेवा) क्या है ? किस की खिद्यत करनी चाहिए ? खिद्यत के बदले क्या मिलता है ? अध्यापक सोच में पड़ गए कि इतने गंभीर प्रश्न का उत्तर बालक कैसे देंगे। किन्तु मंगत का हाथ खड़ा देख कर उनके अन्दर खुशी की लहर दौड़ गई और साथ ही वे हैरान थे कि वह छोटा सा बालक क्या उत्तर देगा। किन्तु देखिए कि कितने उच्च स्तर का उत्तर दिया गया :

"संसार की प्रत्येक वस्तु सेवा कर रही है। सूरज, चाँद, सितारे, हवा, पानी, पत्थर, जान, बेजान (चेतन जड़) जितनी भी खुदा की बनाई कायनात (सृष्टि) देखने में आती है, सब चीजें खिद्यत (सेवा) कर रही हैं। हर एक चीज एक दूसरे की खिद्यत करने के लिए ही दुनिया में पैदा होती है। सिवाए इन्सान के सब चीजें लागर्ज (निष्काम) हो कर दूसरों को सुख दे रही हैं इन्सान गर्ज (कामना) रखता हुआ एक दुसरे की खिद्यत करता है। हत्ता कि (यहाँ तक कि) मां, बाप भी गर्ज करके औलाद की सेवा करते हैं, कि बड़ा

होकर हमारी खिद्यत करेगा। गर्ज रख कर देश की खिद्यत की जाती है। गर्ज रख कर खानदान (परिवार) की दोस्तों की पीरों, फ़कीरों, गुरुओं की खिद्यत इन्सान करता है। गर्ज रख कर खुदा की भी खिद्यत पुन्य दान (इत्यादि) करता है। वगैर गर्ज के इन्सान खिद्यत नहीं करता। सबसे बड़ा / फर्ज (कर्तव्य) इन्सान का लागर्ज खिद्यत (निष्काम सेवा) करना है। खिद्यत करके ही सब लोग बड़े से बड़ा पद यानी ओहदा हासिल करते हैं। अच्छे कहलाते हैं। ईसा, मुहम्मद, राम, बुद्ध, कृष्ण, नानक कबीर सब ने खुदा की याद और खलकत (जनता) की खिद्यत पर जोर दिया है। खिद्यत करने से हर जगह इज्जत, मान, शान मिलती है। खुदा के घर में भी खिद्यत करने वाले को जन्नत, स्वर्ग में जगह मिलती है।

खिद्यत का मतलब (अर्थ) है सेवा। दुनिया में अपने से बड़े बुजुर्ग माता पिता, गुरु की खिद्यत करनी सब से बड़ा फर्ज है। जो भी बड़ा बुजुर्ग, रिश्तादार, दोस्त हो उसकी खिद्यत करनी, शहर वालों की देश की खिद्यत सारे संसार की खिद्यत जितनी जितनी हिम्मत (समर्थ) पड़ती जाये खिद्यत" करता जावे। गर्ज वाली खिद्यत के इवज़ाने (बदले) में दुनिया के सुख आला से आला (बढ़िया से बढ़िया) मिलते हैं। लागर्ज खिद्यत (निष्काम सेवा) से लाज़वाल (अक्षेय) सुख को हासिल कर सकता है। जो कभी खतम (समाप्त) होने वाला नहीं। खुदा हम सबको नफरत (घृणा) रजत से परे रखता हुआ हर एक रूह की खिद्यत करने की अकल (बुद्धि) बख़्शे। जिससे सही (ठीक) रस्ता उस खुदा के पास पहुंचने का मिलता है। असली खिद्यत खुदा की और खुदा के बन्दो की खिद्यत करना है।"

इन विचारों को सुनकर निरीक्षक महोदय और सब अध्यापकगण बहुत खुश हुए और आपस में बातें करने लगे कि लड़का तो छोटा सा है, मगर बातें बड़ी उच्च कोटि की कही है।

असली पढ़ाई

शाम को मुख्याध्यापक श्री सुन्दर दास जी ने घर पर बुला कर कहा कि आप एम० ए० तक पढ़ें। वह पढ़ाई का खर्चा अपने पल्ले से देंगे। आपने विनम्रतापूर्वक मुख्याध्यापक का धन्यवाद किया और कहा यह एक तालीम (विद्या) ही जारी रख सकते हैं। सांसारिक विद्या इनके लिए नहीं है। यह तो अब उसी विद्या को पूरा करेंगे, जिससे संसार की भूली भटकी जनता का भला हो" ।

मिडल परीक्षा में आप प्रथम स्थान पर रहे। मुख्याध्यापक जी ने अध्ययन आगे जारी रखने की पुनः सलाह दी पर आप नहीं माने। जब आपने स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर गंगोठियां की ओर प्रस्थान किया तो आपके सहपाठी और अध्यापकगण आपकी जुदाई सहन न कर सके और पाठशाला से तीन मील तक पैदल छोड़ने आए।

यह था आपके बचपन और विद्यार्थी जीवन का वृत्तान्त जबकि प्रभू प्रेम आपके रोम-रोम में भरा हुआ था।

● जीविका उपार्जन सहित उपासना

नौकरी - पढ़ाई के बाद गंगोठियां लौटने पर सारा समय प्रभु के ध्यान में मगन रहते । एक दिन मां ने कहा, "बेटा कुछ काम करो ताकि जीवन का निर्वाह अच्छी तरह से हो सके। इस पर आपने थोड़े दिन पेशावर में नौकरी की । वहां आपके बड़े भ्राता पंडित ठाकुर दास जी रहते थे। जिस ऊंची अवस्था को आप प्राप्त कर चुके थे, वह भला कब तक छिपी रह सकती थी। कार्यालय में भी आपके सहकर्मियों पर असर होने लगा। कई प्रकार की अद्भुत घटनाएं भी होने लगी । किन्तु एक बहुत ही आश्चर्यजनक घटना घटी जिसके कारण आपको नौकरी छोड़ पेशावर से भाग कर अपने आपको छिपाना पड़ा। घटना इस प्रकार थी :-

करामात- एक दिन आप अपने भ्राताश्री के घर बैठे थे। बख्शी हीरा नन्द जी मटोर निवासी (जिला रावलपिण्डी) भी वहीं मौजूद थे। आध्यात्मिक विषय पर चर्चा हो रही थी। बख्शी जी ने प्रह्लाद भगत द्वारा गर्म खम्बे को अपनी भुजाओं में लपेट कर उससे चिमटने और फिर जीवित रहने की कहानी पर आशंका प्रकट की। उनका कहना था कि सब कपोल कल्पित है। ऐसा होना असंभव है। श्री मंगत राम जी ने उत्तर दिया कि ईश्वर विश्वासी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। किन्तु बख्शी जी न माने और अपनी जिद पर अड़े रहे और साथ ही यह कह दिया कि कोई ऐसा करके तो दिखलाए। आप रिद्धि-सिद्धि या करामातें दिखाने के विरोधी रहे है। मगर एक प्रभु भगत की जीवन घटना को सच्ची सिद्ध करने के लिए निकट ही तन्दूर में, जो अंगारो की भान्ति लाल था और आग तेजी से दहक रही थी, झट अपनी एक टांग को बिना किसी संकोच के डाल दिया। कुछ देर में पास बैठे हुए दफ्तर के साथियों और दूसरे लोगों ने पास जा कर इनकी टांग को खींच कर तंदूर निकाला। क्या देखते हैं कि आग का तनिक भी असर लात पर नहीं पड़ा यहां तक कि बाल तक भी नहीं जले। इस अत्यन्त अद्भुत घटना को देख कर सब लोग चकित रह गए। इस खबर का फैलना और सर्व साधारण लोगों का इस करामात के कारण इनकी ओर प्रवृत्त होना फकीरी स्वाभाव वाले मंगत राम जी के लिए दूभर हो गया। "इन से दो मालिकों की नौकरी नहीं हो सकती" यह कह कर नौ मास की नौकरी छोड़ कर गंगोठियां लौट आए।

खड्डियों का काम- पुनः सारा समय सत् सिमरण और सत्नाम अभ्यास में व्यतीत होने लगा। पहले की भान्ति प्रातः तीन बजे उठ कर पीर ख्वाजा जंगल में चले जाते और घंटों सत् सिमरण में तल्लीन रहते। आपके बड़े भाइयों ने इस बात को बुरा माना कि आपने नौकरी छोड़ दी है। वे लोग आपको कोई और काम करने पर विवश करने लगे। गंगोठियां के निकट ही एक छोटे से कस्बा सागरी में आपको खड्डियाँ लगा कर कपड़ा तैयार करने को कहा गया। यह काम भी आपने थोड़ी सी अवधि तक ही किया। आप के सगे

सम्बन्धियों को यह बात नहीं जची। उन्होंने आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया, इस विचार से कि संभवतः इसी तरह किसी काम में इनकी रुचि बढ़े।

चिकित्सा- आपने मां की सलाह पर आजीविका कमाने के लिए हकीमी का काम शुरू किया। थोड़ी ही देर में आपके इस कार्य में सिद्धस्त होने की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। तब भी रात्रि का अधिकतर भाग बाहर जंगल में ही गुजारते और लगभग 9 बजे सुबह घर वापिस आते जबकि काफी संख्या में रोगी आपकी प्रतीक्षा में बैठे होते। आप थोड़े ही समय में रोगियों को देख कर दवा लिख देते या अगर बनी होती तो दे देते। दवा का दाम किसी से मागते नहीं थे। अपनी खुशी से अगर कोई दे जाते उसमें अपना और माता जी का खर्चा निकाल कर शेष गरीबों और मांगने वालों में बाट देते। जिस रोगी को देखते कि बहुत गरीब है और खाने को भी लाचार है तो दवा के साथ-साथ आहार भी मुफ्त मुहैया करते। जब आप रोगियों को उनके घरों में देखने जाते तो कई बार अपने हाथों से उन्हें दलिया आदि बना कर खिलाते थे और गंदगी भी साफ करते थे। जाने की कोई फीस न थी और न ही रोगियों के घर से कुछ खा-पी कर आते थे। इस कदर निस्वार्थ सेवा से प्रभावित होकर मुसलमान भाई आपको "पीर साहेब" कहा करते थे। जब तक माता जी जीवित रही आपने रोगियों की चिकित्सा का काम जारी रखा। इन वर्षों में जनता की निष्काम सेवा के साथ-साथ घोर तपस्या का क्रम पूर्ववत् चलता रहा। इस बीच माता जी और बहनों ने बड़ा जोर दिया कि विवाह कर ले मगर आप बिल्कुल न माने इनको तो केवल एक ईश्वर प्रेम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं भाता था। मार्च 1928 में माता जी के निधन के बाद आपने तत्काल हकीमी का काम छोड़ दिया और सारा समय प्रभु सिमरण में लगाना आरंभ कर दिया। दिन में केवल एक बार भोजन खाते और उस में गेहूं की एक छोटी सी चपाती और छाछ में पका हुआ थोड़ा सा साग होता था। (आगे चल कर आहार और भी सादा हो गया। वर्षों तक आपने दिन में एक गिलास दूध – चाय का ही सेवन करके समय व्यतीत किया।

आगे क्या- गहन तपस्या, सुदृढ़ सत् स्मरण और पूर्ण ब्रह्मचर्य के बल पर आपको योग की कामिल अवस्था प्राप्त हो चुकी थी। वैराग्य का माह सागर आपके अन्दर ठाठें मार रहा था। अब तो कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह गया था सिवाए इस काम के कि वासनाओं की अग्नि में तपते हुए साधारण लोगों को जीवन के वास्तविक लक्ष्य, सच्ची खुशी और शीतलता से अवगत किया जाए और साथ ही आध्यात्मिक उन्नति के सरल साधन बतलाए जाएं।

महत्वपूर्ण भेंट- जुलाई, 1928 का जिक्र है कि श्री महाराज जी (बचपन में गांव के लोग श्री मंगत राम जी को "भगत जी" कह कर बुलाते थे। बाद में उन्हें "महाराज जी" कहा जाने लगा) संयोगवश रावलपिंडी पहुंचे। इन्हीं दिनों अहमदाबाद (गुजरात) के खाड़िया गेट स्थित मंदिर कबीर साहेब के महन्त रतनदास जी, जो अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण कर पूर्ण गुरु की खोज करते करते वहां आये थे। वह एक सुबह नाला लई चूहों पर चश्मों के किनारे बड़े उदास और निराश हो कर बैठे थे मन में यह सोच कर कि क्या इतना बड़ा भारत देश सिद्ध पुरुषों से विहीन हो चुका है। सहसा श्री महाराज जी स्वयं उस जगह आ पहुंचे और महन्त जी से उनकी शंकाओं के बारे में पूछा। महन्त जी ने तीन-चार प्रश्न महाराज जी के समक्ष रखे। अपने प्रश्नों के पूर्णतया तसल्ली दायक उत्तर पाकर उन्हें विश्वास हो गया कि पूर्ण योगी ने निराशा की स्थिति में आशा की किरण दिखलाई है। तत्पश्चात् गंगोठियां जा कर और वहां कुछ दिन ठहर कर महाराज जी के सदुपदेशों से लाभान्वित हुए। महाराज जी की असीम कृपा का वर्णन महन्त जी ने इन शब्दों में किया है :-

"आखिर मेरे पूर्ण भाग्य से मुझ पर ईश्वर की दया हुई तो इन महापुरुषों का दर्शन सहज स्वभाव ही उस वक्त हो गया जब कि मैं बहुत फिक्रमंद (चिन्तित) और घबराया हुआ था। एक दो घड़ी के सत्संग से मेरे सब संशय दूर हो गये।" महन्त जी का यह भी कहना है कि श्री महाराज जी की कृपा दृष्टि से मस्ती की जो स्थिति उन पर छाई रही, उसका वर्णन करना लेखनी और जिह्वा की शक्ति से परे है।

महन्त जी की प्रार्थना पर महाराज जी आखिर नवम्बर, 1938 में अहमदाबाद पधारे। वहां कबीर मन्दिर खाडिया गेट के पास आप को ठहराया गया। कई साधकों और जिज्ञासुओं ने आप से योग मार्ग सम्बन्धी कई कठिनाईयों का पूरा समाधान कराया। अहमदाबाद में ठहरे हुए सत्गुरु देव ने अनुभवी वाणी उच्चारण की, जिसे महन्त जी ने लेखनीबद्ध कर लिया और तत्पश्चात् उसे "चिरंजीव गोष्ट" नामक पुस्तक में छपवाया। इसके अतिरिक्त वहां "योग चिन्तामणि" भी प्रकाशित हुई जिसमें सहज योग के गुह्य रहस्यों को सरल शब्दों में वर्णित किया गया है। योग चिन्तामणि में श्री सद्गुरुदेव जी ने गुप्त ज्ञान और ब्रह्म योग से संबंधित सन्त रतन दास जी पर की गई विशेष अनुकम्पा का वर्णन किया है।)

यज्ञ - लोगों को सत्संग की ओर उन्मुख करने के लिए महाराज जी ने सबसे पहले गांव गंगोठियां में यज्ञ का क्रम जारी किया, बिल्कुल निजी बचत और परिश्रम से। पहला यज्ञ सन् 1927 की शरद ऋतु में हुआ। इसके बाद ऐसे यज्ञ हर वर्ष सन् 1946 तक होते रहे। (गंगोठियां में एक पक्के सत्संग हाल का भी निर्माण हो चुका था।) सत्पुरुष ने अपनी अमृत वाणी में यज्ञ की महानता का वर्णन किया है। इसके लाभों में निष्काम सेवा की शिक्षा शामिल है। यज्ञ में आये हुए सब जीवों को अपनी आत्मा का ही रूप समझ कर सेवा करनी यज्ञ का सही स्वरूप बताया है। आप फरमाते हैं कि यज्ञ कर्म से अनेक क्रूर कर्मों का नाश होता है।

यज्ञ कर्म का ऊंच परतापा। कोटि उपद्रव हरे सन्तापा ।

यज्ञ कर्म धर्म परगासे । यज्ञ कर्म से शान्त निवासे ॥

ऐसे यज्ञ में जो सेवा कीजे । तन मन धन सफल कर लीजे ।

समता भाव सब में दिखलाई। एको ब्रह्म सरब दरसाई ॥

क्या करता क्या भोगता सब ही प्रेम समाये ।

"मंगत" महिमा यज्ञ की देव मुनी नित गायें ॥

आश्रम- देश के बंटवारे के बाद जगाधरी (जिला अम्बाला) में, जहाँ संगत समतावाद, समता योगाश्रम की बुनियाद डाली गई, हर साल वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर यज्ञ (लंगर) होता है, जिसमें हजारों लोग भाग लेते हैं और भी अनेक स्थानों जैसे दिल्ली, देहरादून, आगरा, अम्बाला शहर व केंट बरेली, हल्द्वानी, पठानकोट, फिरोजपुर, मलोट मंडी, श्री गंगानगर (बिहार) में समता योगाश्रम अथवा सत्संग शालाएं बनी हुई हैं। वार्षिक सत्संग सम्मेलनों के समय यज्ञ का भी प्रबन्ध होता है। इसके अतिरिक्त पंजाब खोड़ (दिल्ली) में 'श्री सत्गुरु संगत समतावाद' के प्रेमी बड़ा सम्मेलन और यज्ञ करते हैं। "महात्मा मंगत राम मिशन" के प्रेमी समता धाम हरि नगर (दिल्ली) में भी ऐसा ही करते हैं।

"संगत समतावाद रजिस्टर्ड" की स्थापना सितम्बर, 1954 के समय एक बोर्ड आफ ट्रस्टीज बनाया गया। आश्रमों की व्यवस्था और संगत के अन्य कार्यों को हाथ में लेने के अभिप्राय से। शुरू के बोर्ड के एक वर्तमान सदस्य श्री ओम कपूर संगत के सेवा कार्य में बड़े आगू रहे हैं। तपोभूमि आश्रम को उन्नत करने में (जहां हमारे एक स्वर्गीय बुजुर्ग प्रेमी ठाकुर यादराम सिंह जी निरन्तर बारह वर्ष तक रहते रहे) (श्री ओम जी का बड़ा हाथ रहा है अब श्री नरेन्द्र जिन्दल तपोभूमि प्रबन्ध से सम्बन्धित है। हमारे एक भिक्षु प्रेमी भाई रामजीदास जी ने हथनी कुण्ड (ताजे वाला) आश्रम को विकसित करने में काफी प्रयास किया है। शेष सभी आश्रमों की व्यवस्था और उन्नति के लिए स्थानीय संगतों के प्रेमी ध्यान धन और अमूल्य समय देते आ रहे हैं।

महाराज जी का कथन - "आश्रम इस गर्ज (उद्देश्य) से कायम हुए हैं और होंगे कि जिनमें संगत इकट्ठे हो कर ख्यालात (विचारों की एकता, कोशिश की एकता यानी बाहमी (परस्पर) मेल मिलाप और अपनी बेहतरी एकता और कल्याण की खातिर सोचे। रिटायर शुदा (अवकाश प्राप्त) प्रेमी सज्जन दुनियावी कामों से परागत (निवृत्ति) पा कर यानी वक्त निकाल कर तप की खातिर रह सकें।

● भ्रमण, भक्ति और लोक सेवा

जब तक मां जीवित रही, महाराज जी घर से दूर भ्रमण के लिये नहीं निकले। मां के निधन के पश्चात् जनता के कल्याणार्थ भ्रमण प्रारंभ किया। आप फरमाया करते थे- "यह चाहते हैं कि जो शान्ति और ठण्डक इन्हें मिली है, वह दूसरे जीवों को भी मिले।"

दिसम्बर, 1935 में आप लाहौर गए। वहां डाक्टर वीर राजा राम से भेंट हुए। उनकी श्रद्धा को देखकर आपने सत् वाणी प्रकट की और कुछ उपदेश दिए, जिनको डाक्टर साहेब ने लिखकर "पवित्र जीवन" नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर जन साधारण में बांटा।

लाहौर में अनेक जिज्ञासुओं से महाराज जी की भेंट हुईं जिनमें महता अमोलक राम जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप महाराज जी को अपने पैत्रिक शहर काला गुजरा (जिला जेहलम) ले गए। बाद में आपको महाराज जी के पास चिरकाल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सरकारी नौकरी से निवृत्त होने के पश्चात् आपने जगाधरी आश्रम की स्थापना और विकास में बहुत समय दिया। महाराज जी आपको प्यार से "बाबू" कहा करते थे। दादू जी लिखने पढ़ने, प्रबन्ध कार्यों, हिसाब-किताब और कानून सम्बन्धी मामलों में विशेष दक्षता रखते थे।

महाराज जी ने जनता में सत् का प्रसार करने के लिए घर-बार को त्याग दिया और मार्च, 1938 से विधिवत् भ्रमण करने का कार्यक्रम आरंभ किया और जीवन पर्यन्त अर्थात् जीवन के अन्तिम क्षणों तक इसी लोक सेवा में रत रहे। (आपने अमृतसर में फरवरी 1954 को नश्वर शरीर का त्याग किया)।

"जीवन गाथा" (उर्दू-हिन्दी) में भ्रमण के ब्यौरे - कहां कहां गये - किस-किस से मिलें, क्या-क्या बातें हुईं वर्णित हैं हिन्दी में एक और पुस्तक "मेरे गुरुदेव" हमारे प्रेमी भाई प्रो० सोम राज गुप्त की लिखी हुई महाराज

जी के जीवन और उनकी शिक्षा पर प्रकाश डालती है। अंग्रेजी में “A MAN OF GOD” हमारे प्रेमी भाई हरबन्स लाल जी चावला ने लिखी है।

समता की शिक्षा के प्रचार हेतु महाराज जी ने एक उर्दू मासिक पत्रिका "समता दर्पण" प्रकाशित करने की आज्ञा दी। हमारे एक प्रेमी प्रो० रतन लाल जी भाटिया प्रारंभ अर्थात् 1953 से ही इसका सम्पादन कर रहे हैं। सद्गुरुदेव जी की वाणी और वचनों के अलावा अन्य सन्ती, महात्माओं फ़कीरो की वाणियां और धार्मिक पुस्तकों के संदर्भ इस पत्रिका में प्रकाशित होते हैं। बाद में "समता सन्देश" हिन्दी मासिक पत्रिका जारी की गई। इस पत्रिका के काम में श्री दौलत राये जी आगरा निवासी ने बहुमूल्य सेवा की है। अब श्री कृष्ण लाल जी शर्मा दिल्ली निवासी इस का सम्पादन करते रहे हैं। सन् 1985 के प्रारंभ से एक अंग्रेजी त्रैमासिक “THE SILENT LOGOS” भी संगत समतावाद की ओर से श्री पुरुषोत्तम महाजन प्रकाशित कर रहे हैं।

हमारे एक बड़े परिश्रमी और कर्मठ प्रेमी श्री कर्म नारायण शर्मा का भी "समता दर्पण" से बड़ा सम्बन्ध रहा है। अब वह इसके सम्पादक है। वह अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी महाराज जी के जीवन और शिक्षा के बारे में वर्षों से लेखन कार्य करते आ रहे हैं। हमारे एक बुजुर्ग प्रेमी श्री नरसिंह दास जी लौ समता साहित्य के भावार्थ के प्रकाशन में अग्रणी रहे हैं। अंग्रेजी में एक पुस्तिका "DIVINE SEED THOUGHTS" हमारे प्रेमी भाई परस राम जी हरयाल ने निकाली है जिसमें “ग्रन्थ श्री समता विलास” के वचनों का सारांश दिया है। आपने एक पुस्तक हिन्दी में "समता साधन सारांश" नाम से भी छपवाई है जिसमें 'ग्रन्थ श्री समता प्रकाश' और 'श्री समता विलास' में से चुने हुए शब्द और वचन सार रूप में विभिन्न शीर्षों के अन्तर्गत दिये गये हैं।

इस लघु पुस्तक में महाराज जी के सत् उपदेशों में से कुछ एक उद्धरण (प्रसंग) और चुनिन्दा प्रश्न उत्तर नवमें अध्याय में दर्ज किए गए हैं। साथ ही उनकी वाणी के हजारों शब्दों में से कुछ शब्द इस उद्देश्य से चुने हैं कि ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के अध्ययन की रुचि और अधिक बढ़े।

आपके भ्रमणकाल के दौरान हज़ारों लोग बिना किसी धर्म और सम्प्रदाय के भेद-भाव के आपके उपदेशों से लाभान्वित हुए। सैकड़ों ने आपसे समता के ज्ञान और योग के गुप्त रहस्य की विद्या सीखी।

यहां केवल साधारण जानकारी के लिए उन स्थानों के नाम (क) जहां-जहां आप पधारे और (ख) उन विशेष स्थलों की चर्चा है, जहां पर आप ने तप की अवधि में गहन समाधि में प्रकट होने वाली अमृत वाणी उच्चारण फरमाई है।

(क) पश्चिमी कश्मीर में

कोहाला, जल्मादा, चनारी, नखेतर पर्वत, शारियां (सरूपा जंगल) जंगल फीला दोमेल, मुजफ्फराबाद। इसके अतिरिक्त जम्मू, श्रीनगर, मटन में भी गए।

पश्चिमी पंजाब

लाहौर, जिला हजारा में सराय सालह, छज्जियां, हरिपुर, सरबगला, उस्मन खट्टर, गोलड़ा, ऐबटाबाद; जिला कैमबलपुर में थट्टा, पंजा साहेब; जिला रावलपिण्डी में रावलपिण्डी, मटोर, कहूटा, जण्ड महलू, हरनाल, कोरी, बम्नयाला; जिला जेहलम में काला गुजरां; जिला गुजरात में कठनाला तथा झंग मद्ययाना; स्यालकोट के पास सुखो की मण्डी, मिलखांवाला।

पूर्वी पंजाब

अमृतसर, तरणतारण, गुरदासपुर, काहनोवान, शाहपुर कण्डी, दोरांगला, पठानकोट, जालंधर, अबोहर, मलोट मंडी, होशियारपुर।

हिमाचल प्रदेश में शिमला, कागड़ा, धर्मशाला, बैजनाथ, सम्याला।

हरियाणा में जगाधरी, ताजेवाला, अम्बाला, होडल मण्डी, कुरूक्षेत्र। उत्तर प्रदेश में आगरा, देहरादून, केला घाट, बरेली, मन्सूरी, हल्द्वानी। गुजरात

काठियावाड़ में अहमदाबाद और मध्य प्रदेश में पचमढ़ी। इनके अतिरिक्त आप तीन बार दिल्ली भी पधारे।

(ख) तप तथा अमृत वाणी प्रकाश के मुख्य स्थान : लाहौर, अहमदाबाद, पचमढ़ी, नखेतर पर्वत, थट्टा, शाहपुर कण्डी ।

भ्रमन आदि के प्रसंग में एक ऐसी महान हस्ती की चर्चा करना आवश्यक है जिन्हें वर्षों तक श्री महाराज जी के चरणों में बैठने और सेवा का शुभ अवसर मिला । आप थे भगत बनारसी दास। इनकी पहली भेंट महाराज जी से मई, 1938 जल्मादा में तप के समय हुई। आप महाराज जी के शरीर त्यागने तक उनके साथ पूरे मनोयोग से सेवा में रहे। इस बीच महाराज जी जहां कहीं भी एकान्तवास के लिए वनों, मैदानों, शमशानों या सुनसान स्थलों में जाते भगत जी सदैव उनके साथ रहते थे। महाराज जी रात्रि दस ग्यारह बजे से प्रातः छः सात बजे तक समाधिस्थ अवस्था में निरन्तर वाणी का उच्चारण करते और भगत जी उसको साथ-साथ लिखते जाते। अगले दिन आप उसको पढ़कर सत्गुरु जी को सुनाते यदि कोई त्रुटि होती तो पूछ कर पूरा कर लेते। भगत जी ने बाद में अमृत वाणी और प्रवचनों को एक जगह संगृहित करके दो ग्रन्थो : "श्री समता प्रकाश" और "श्री समता विलास" के रूप में स्वयं लेखनीबद किया । पहली बैसाख सम्बत् 2005 तदनुसार 13 अप्रैल, 1948 के शुभ सिद्ध खड्ड, मसूरी के स्थान पर ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के दिन अन्तिम पृष्ठ सद्गुरुदेव जी ने अपने कर कमलों से "चेतावनी" लिख कर अपने हस्ताक्षर कर दिये और भगत जी को आशीर्वाद देते हुए कहा "प्रेमी इस ग्रन्थ ने तेरे हाथों लिखा जाना था। भाग्यशाली जीवों को ऐसा मौका मिला करता है। इस सारे कारज को ईश्वर आज्ञा समझो बनारसी तुमने जो काम किया है, जब तक सूरज चाँद रहेगा, तेरा नाम रहेगा "।

सद्गुरुदेव के शरीर त्याग करने के बाद भी भगत बनारसी दास जी गुरुदेव के संदेश को स्थान-स्थान पर पहुंचाते रहे और 15 जनवरी 1987 प्रातःकाल अपना शरीर छोड़ गए।

महाराज जी के भ्रमण के दौरान अनेकों शिक्षाप्रद घटनाएं घटी। इनमें से कुछे एक का ही यहां वर्णन किया जाता है। मगर एक यथार्थता का दुहराना जरूरी है कि महाराज जी करामातों में विश्वास नहीं रखते थे। उनका कहना था कि "प्रेमी, तुम्हारी जिन्दगी स्वयं एक करामात है इसे देखो" हम लोग जिन्हें महाराज जी के चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला, यह भी उस सन्त की एक बड़ी करामात देख कर हैरान होते थे कि उन्होंने किस तरह सांसारिक आवश्यकताओं और इच्छाओं पर ही नहीं, वरन् भूख, प्यास और निद्रा पर भी काबू पा लिया था, यद्यपि ब्रह्मलीन पूर्ण फकीर की जिन्दगी का यह एक छोटा सा पहलू था।

सहनशीलता

एक बार कोहाला की ओर जाते हुए रावलपिंडी से बस पर सवार हुए और फ्रंट सीट पर बैठ गए। आपके सादा कपड़ों को देख कर दूसरी कोई सवारी जो बाद में आती, आपको पिछली सीट पर जाने के लिए कहती। आप तत्काल सीट बदल लेते। करते-करते आप फट से काफी पीछे चले गए। एक सज्जन जो सब माजरा देख रहे थे, उनको यह बात अनयुक्त लगी। वह दूसरी सवारियों से झगड़ने लगे। इस पर आपने सहज भाव में कहा, "प्रेमी, आपको इनसे झगड़ने की कोई आवश्यकता नहीं इन्हें (स्वयं अपने आपको) तो लारी में बैठना है। कोई आगे पीछे की बात नहीं" इस उत्तर से प्रभावित हो कर उस सज्जन ने आपको पास बिठा लिया।

भोजन बंद

एक बार रावलपिण्डी में एक प्रेमी के घर आप खाना खाने गए। घर वालों ने एक थाल में कई प्रकार की सब्जियां रख कर खाना परोसा। आप देखकर हैरान हो गये और पूछा कि उसके बनाने में कितना वक्त लगा है उत्तर मिला " दो-तीन घंटे "। यह सुनते ही आपके चेहरे पर उदासी के चिन्ह दिखाई देने लगे मानो कह रहे हो - "जीवन की इतनी अनमोल घडियां एक

फ़कीर का खाना बनाने में खर्च हो गई। जीवन में ये क्षण जो ईश्वर की याद में लगने चाहिए थे, यूँ ही व्यर्थ हो गए। खैर भविष्य में ऐसा नहीं होगा। (तत्पश्चात् उन्होंने खाना बंद कर दिया।)

उस परोसे हुए खाने से दो टुकड़े लेकर शेष भोजन लौटा दिया।

जड़ चेतन की पूजा

एक बार आपको रात्रि एक मन्दिर में बितानी पड़ी। शाम को मन्दिर के पुजारी ने आरती, आदि करके भगवान की पूजा की। इतने में दो यात्री मन्दिर में आ गए और उन्होंने पण्डित जी से रात्रि वहां गुजारने की प्रार्थना की। उत्तर मिला - "यह तो भगवान का मन्दिर है, कोई सराय थोड़ी है, जो आपको यहां रहने की आज्ञा दी जाए"। वे लोग निराश होकर चले गए। बाद में आपने पण्डित जी से पूछा "पण्डित जी, आप जड़ की पूजा करते हैं या चेतन की"? पुजारी ने जबाब दिया, "महाराज, चेतन की"। इस पर आपने कहा- "पण्डित जी, जिस मूर्ति के आगे तुम खड़े हो, यह तो जड़ है"। पुजारी बोला, "हां महाराज"। आपने कहा, "जो दो अतिथि आये थे वे तो दोनों साक्षात् चेतन थे। तुमने उनको कैसे निराश कर दिया। जो चीज जीवित प्रत्यक्ष प्रमाण है, उसको मानते नहीं और जो चीज देखी नहीं, उसका सम्मान करते हो, यह कहां की दानाई है।"

फ़कीर कभी बुरा नहीं चाहते

एक बार आप मटोर के क्षेत्र में एक पहाड़ी पर तप कर रहे थे। कुछ स्थानीय मुल्लाओं को यह बात बुरी लगी। उन्होंने आपकी हत्या करने का षडयन्त्र रचा। तीन दिन तक निरन्तर हत्या के इरादे से रात्रि को आते रहे। मगर ऐसी-ऐसी डरावनी शकलें उनको देखने को मिली कि वे स्वयं भयभीत होकर भाग जाते। हत्या करने में सफलता नहीं मिली। आखिर वे अपने गुनाह (पाप) बख्शाने के लिए आपके पास आए और प्रार्थना की-

मुल्ला जी - स्वामी जी हमारे गुनाह बख्श दें। हम बड़े गुनाहगार (पापी) हैं।

महाराज जी - प्रेमियों ! आपने कोई गुनाह नहीं किया, जिसके लिए यह फकीर तुम्हें माफी दे।

मुल्ला जी - स्वामी जी ! हम तीन दिन लगातार आपके कतल करने के इरादे से आते रहे, मगर कामयाबी नहीं मिली।

महाराज जी - कोई बात नहीं प्रेमियों! फकीर (सन्तजन) किसी का बुरा नहीं चाहते।

ऐसी चादर

एक बार किसी प्रेमी ने पार्सल भेजा। उसे खोलने पर उसमें से एक चादर निकली। आपने निम्नलिखित शब्दों में पत्र लिखा :-

ऐसी चादर दात करो, मैं ओढ़ूँ नगन शरीर।

जनम जनम का मिटे संदेशा, काल चक्र तकसीर ॥

जत का ताना, सत का पेटा, मति धीर जुलाहा बनावे।

प्रेम की नाली से बुनत करीजे, मन पवन की खींच लगावे ॥

बुने अति अत गाढ़ा कपड़ा, वैराग की ठोक लगाई।

नाम ब्योपारी कपड़ा लेवे, नित बिरह का माप कराई ॥

कहन कथन विच आवे नहीं, जो कपड़ा चमक दिखाई।

तीन लोक में ढूँढत फिरी, कोई विरला मोल चुकाई ॥

हर जन साजन कपड़ा लेवे, त्रिबेनी घाट में धोवे।

तीन ताप की मैल को हरे, नित सत यतन परोवे ॥

सत्गुर दरजी सीवे चादर, सुरत निरत दोउ पाट मिलाई।

विवेक की सूई ध्यान का धागा, तप योग धारे कठिनाई।

निर्वाण शब्द की अखंड चादर, कोई गुरुमुख साजन ओढ़े ।

"मंगत" तिस के चरण कंवल में, नित-नित प्रीती जोड़े ।

पत्र लिखवाने के बाद आपने वह चादर भगत बनारसी दास को दे दी और आशा दी कि प्रेमी को लिख दो कि आइन्दा (भविष्य में) इस तरह पार्सल न किया करे। भेंट हाज़र होकर ही करनी चाहिए ।

सारी दुनिया तकिया

एक बार श्री महाराज जी काला गुजरा में बिराजमान थे, तो शहर से बाहर कुछ दूरी पर बनी वादियां एक एकान्त स्थान पर छायादार पेड़ों के नीचे समय व्यतीत किया करते थे। एक दिन वहां बैठे थे तो चौधरी क्रीमदाद नम्बरदार आपके चरणों में हाज़िर लोकर अभिवादन कर निकट बैठ गये और प्रार्थना की :-

"पीर जी, यह सेवक आपके हर रोज दीदार (दर्शन) करता है। जिस जमीन में रात को आप बैठते हैं, वह इसी खादम (दास) की है। आप हुक्म दे तो इसमें बीघा दो बीघा जमीन मे आपके बैठने के लिए तकिया बना दें और वहीं ठहरा करें। श्री महाराज जी बोले, "प्रेमी तेरी बड़ी मेहरबानी है। जो तूने ऐसी पेशकश की है। प्रभु तुम्हें यकीने पाक (सत् विश्वास) दे जो कि इस कद्र नेक ख्याल फकीरों के लिए बनाया है। फ़कीर तकियों के हक में नहीं है । सारी दुनिया ही इनका तकिया है। फ़कीर एक जगह बना कर बैठा नहीं करते । न किसी जगह की पाबन्दी मे आने वाले हैं। हिन्दू मुसलमान सब इनके लिए एक जैसे हैं । किसी को किसी फर्क (भेद-भाव) की निगाह से नहीं देखते जाते - आला (ईश्वर) सब में एकसा (एक समान) है गो (यद्यपि) जिस्म सबके खाकी है। सबको दिल के राहत की जरूरत है। वह कल्बी सकून । (मन की शान्ति) फ़कीरो के पास बैठने से मिलता है।

प्रभु की कृपा

एक बार सरूपा जंगल (कश्मीर) में सतह समुद्र से लगभग आठ हजार फुट की ऊंचाई पर एकान्तवास कर रहे थे। एक दिन एक बुजुर्ग मुसलमान भाई दूध लेकर आया। प्रसाद सेवा में रखकर नाम किया और निकट ही बैठ गया।

वार्तालाप इस प्रकार हुआ:-

गुरुदेव - बाबा, किधर से आया है?

बाबा - साईं जी आज सपने में पता लगा कि इधर कोई फकीर आया हुआ है। दिल ने कहा सलाम के लिए जाओ। सुबह उठकर पता किया तो मालूम हुआ कि चौधरी फकीर चन्द (महाराज जी के शिष्य) के गुरु इस जंगल में आए हुए हैं बड़े रब्ब के बन्दे हैं। फिर सुबह सुबह घर से चल पड़ा। उस का घर इस जंगल से 12 मील की दूरी पर था।

गुरुदेव - बाबा लड़के कितने हैं ?

बाबा - अल्लाह की दौलत दो है। और सब प्रभु कृपा है।

गुरुदेव - रास्ते में जंगल था, डर नहीं लगा?

बाबा - पीर जी बन्दे के साया (परछाई) से सब चीजें डरती हैं। अगर बन्दे के अन्दर जरा खौफ (भय) हो तो। जब इसके अपने कर्म ही दूसरे को नुकसान (हानि पहुंचाने वाले होते हैं, तब दूसरी चीज इस पर हमला (आक्रमण) करती है। बाकी हर माल जंगली जानवर अपने-अपने उसूल में हैं। बन्दा (मनुष्य) ही वे असूली कर जाता है। बन्दा ही नेक (शुभ) व वद (अशुभ) अपना स्वभाव बना लेता है, गो (यद्यपि) अशरफुल - मलूकात (सर्वश्रेष्ठ प्राणी) है। सब समझ रखता है।

गुरुदेव - बाबा तुम बड़े अच्छे फ़कीर ऋषि हो। जगलो में रहते हो खुदा की याद करते हो और उसकी रज़ा वक्त निकाल रहे हो। अपने कर्म की सज़ा-जज़ा हर रूह (प्राणी) पा रही है। अच्छे कर्म से अच्छी आदत बनती है, खराब कर्म से खराब।

खुदा सबको नेक समझ, नेक फेल (कर्म) बख़्शें !

बाबा - पीर जी दुआ करो, खुदा ईमान और सब बख़्शें।

गुरुदेव - खुदा हर एक पर मेहर करने वाला है यकीन रखो।

सतगुरु लक्षण - भगत बनासी दास शुरू में महाराजजी से मिलने पर जब उनके चरणों में रहने का आग्रह कर रहे थे, तो थोड़ी देर में क्या देखते हैं कि आखें बन्द किये ही सतगुरु वाणी का उच्चारण कर रहे हैं। उसे श्रवण करके प्रेम-द्रवित हो गये और फट से नोट बुक निकाल कर लिखने लगे। वाणी की समाप्ति पर गुरुदेव ने आखें खोली और भगत जी को लिखता देख कर कहने लगे क्यों लिख रहे हो ? यह बातें घर-घाट का नहीं रहने देती !" भगतजी बोले " महाराजजी कुछ पता नहीं लगता। आप के चरणों में बैठकर कुछ इस कदर शांति प्राप्त होती है और ऐसा प्रेम अन्दर से उठ रहा है जो इस बात पर मजबूर कर रहा है कि हर वक्त आपकी सेवा में रहकर यह वचन लिखता रहूँ।

गुरुदेव ने कहा - फकीरों के पास रहना बड़ा ही मुश्किल है!

उनके फरमाने पर कि अब जो लिखा है, पढ़ कर सुनाओ, भगत जी ने पढ़ना शुरू किया। उन में से चन्द शब्द यह हैं:

जप तप संयम साधना, मोह माया से उदास ।
पर उपकारी विरत जा, शब्द अलख चित्त वास ॥
तन मन की शोभा तजे, रहे आलम में परवीन ।
बानी निरपख बोलदे, एह सतगुर लक्षण चीन ॥
सब जीवो से एक दृष्ट, प्रेम समता ज्ञान ।
वरण कुल नहीं मानदे, केवल सत ध्यान ॥"

2. समता - महत्व और उपदेश

"समता विलास से"

- समता का असली अर्थ यह कि हर हालत में एक रस होना। ग्रहण और त्याग की कामना से मुक्ति हासिल करनी।
- समता का असली रस इन्द्रियों के भोगों से विरक्त होने से मिलता है।
- समता शक्ति अनुभव करके कुल महापुरुषो ने निजात (मुक्ति) हासिल की और लोगों को राहते अब्दी (शाश्वत शान्ति) सिखलाई ।
- समता का जहूर (प्रकट स्वरूप) कुल दुनिया है । सब पदार्थ एक दूसरे के प्रेम से खड़े हैं।
- समता शक्ति से कुल दुनिया का निजाम (शासन) खड़ा है।
- समता तत् के पूर्ण मानी (अर्थ) है एकता (EQUALITY), मसावात यानी एक भाव की तहकीकात (खोज) करना। ममता रूपी विकार जो कि पल-पल में ख्यालात (विचारों) को भरमाता है, बगैर समता तत् के समझने के कभी नाश नहीं होता ।
- समता के आधार पर कुल दुनिया की राजनीति और धर्म नीति बनी है । जो समता के बगैर नीति होती है, वह दुःखदाई है और जल्दी नाश हो जाती है।
- समता की हिदायत सबको निजात देने वाली है. सब मजहबी झगडों और दुनिया के झगड़ो से ।
- समता की हिदायत करने वाला ही असली रहनुमा है । इसके बगैर जो उपदेश है, वह बादमुबाद (वाद-विवाद) है ।

- समता ज्ञान कोई फिरका (सम्प्रदाय) या मज़हब नहीं है, बल्कि हरेक मज़हब की बुनियादी रोशनी है।
- समता ज्ञान फिरका प्रस्ती (साम्प्रदायिकता) । मुल्क प्रस्ती (राष्ट्रीयता) कुल जात प्रस्ती से बालातर (ऊपर) है। फिरका प्रस्ती में भी खुदगर्जी (स्वार्थ) है। मुल्क प्रस्ती में भी ममता है। कुल जात का अभिमान भी कैद है।
- समता ज्ञान शरीर अभिमान और कर्म अभिमान के छोड़ने से प्राप्त होता है।
- समता ज्ञान शुद्ध उपासना से यानी ईश्वर को कर्ता हरता समझ कर स्मरण करने से हासिल होता है।
- स्वार्थ बुद्धि यानी खुदगर्जी हर वक्त जीव को बन्धन दर बन्धन में डालती है। वस्तु प्राप्त होने पर भी और वंजोग होने पर भी, कभी शान्ति को हासिल नहीं कर सकता। जब समता ज्ञान यानी एक भाव को विचार करता है, तब उसके अन्दर निष्काम कर्म आदि श्रेष्ठ गुण प्राप्त होते हैं।
- समता मार्ग में आत्म निश्चय और लोक सेवा मुख्य साधन है।
- समता मार्ग में हर नेक काम के शुरू में ईश्वर की उस्तत करना लाज़मी (अनिवार्य) है और किसी चीज का आधारी होना मना है।
- समता मार्ग में दुनियावी रस्मों रिवाज को बिल्कुल साधारण करना और तमाम त्वहमात का त्याग लाज़मी है।
- समता की तालीम (शिक्षा) आम हिन्दु सम्प्रदाय और दीगर मज़ाहब में इस तरह है जिस तरह माला के मनकों में धागा।
- समता की तालीम तमाम इखलाकी बुज़र्गों के जीवन आदर्श का विचार सुनना और उस पर कारबन्द होना सिखलाती है।
- समता की तालीम सही कानूने (कुदरत) का मुताल्या (अध्ययन) करने में और अपने को कुदरती जिन्दगी बनाने के वास्ते हिदायत करती है।

समतावाद :

समता में यकीन (विश्वास) रखने वाले सभी प्रेमियों के लिए श्री सतगुरु जी ने निम्नलिखित उपदेश दिये हैं-

1. समतावादी सज्जन ईश्वर के सत नियमों का पालन करना अधिक जरूरी फर्ज जानकर हर एक मजहब वाले से निर्वैर होकर बर्ताव करना ही अपना मुख्य धर्म जाने और अपने आपको ईश्वर आज्ञा में निश्चित करके समभाव में स्थित होना ही परम साधन समझें।
2. जिस-जिस मजहब, पंथ में जो समतावादी सज्जन होवे उसको अपना जीवन निर्विकार बनाना और दूसरों की कल्याण चाहनी अपना मुख्य उद्देश्य जाने।
3. भिन्न-भिन्न मजहबी व (तथा) मुल्की रस्मों रिवाज के तंग दायरों से अपने आपको आजाद करके उनके बादमुबाद से मुस्तती हासिल करें और निष्काम भाव से सत्कर्मों में अपने आपको दृढ़ करें।
4. समभाव ही कल्याण है। समभाव ही जीव का वास्तविक स्वरूप और परम धाम है। समभाव ही धर्म है। समभाव की प्राप्ति में यत्न करना ही गुरुमुख मार्ग है। इस वास्ते अपने आपको मजहबी खुदगर्जी (स्वार्थ) से आजाद करके सत् असूलों में पाबन्द होने का सत् साधन धारण करे और हर घड़ी हर लम्हा (क्षण) अपने-आप पर काबू पाने की कोशिश करें। इसी में असली शान्ति है।

विशालता और पवित्रता

महात्मा श्री मंगत राम जी ने "संगत समतावाद" की बुनियाद रखी। साथ ही उनका नजरिया (दृष्टिकोण) था कि संसार के सभी प्राणियों को संगत समतावाद ही जानें आपका कथन है कि "समता की तालीम मुकम्मल (सम्पूर्ण) हो चुकी है और कुछ लिखने लिखाने की जरूरत नहीं रही, जैसा कि ईश्वर आज्ञा हुई है। अब सिर्फ सेवादार भिक्षुओं की जरूरत है, जो सदाचारी, परोपकारी, पूर्ण त्यागी और समय का बलिदान करने वाले हो और हर सम्मत

में समता के उसूलों का प्रचार करें। अपने उच्च जीवन यानी अमली जिन्दगी से और जीवों पर असर-अंदाज़ (प्रभावशाली) हों। पाच मुख्य नियमों - सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् स्मरण पर खुद शामिल हो और दूसरों को चलावें। नुत्ताचीनी या दूसरों की ऐबजोई (छिद्रान्वेषण की भावना) करने का किसी को कोई हक नहीं है संगत के तमाम प्रेमी अपनी जरूरतों को काफी कम करके दूसरों की उन्नति की खातिर अपना तन मन धन निष्काम भाव से अर्पण करें मुस्तहकि (अधिकारी) की इमदाद (सहायता) तालीम पर खर्च, बेकारी हटाने में सहायता, ऐसे-ऐसे शुभ काम को ही ईश्वर भक्ति और गुरू भक्ति समझें।

आप यह भी समझाते है- "जो एक ईश्वर को सब में नहीं देखता, वह ईश्वर हस्ती से मुनकर (नास्तिक) है। जो प्रेम करके दुखी जीवों की सेवा नहीं करता, वह ईश्वर हुक्म से मुनकर है। जब माया का अभिमान प्रचण्ड होता है, तब खुदगर्जी और खुदपसन्दी में गिरफ्तार होकर अपनी इखलाकी जिन्दगी (सदाचारी जीवन) को नाश कर देता है। ख्वाहिश और गज़ब के अज़ाब (वासना और हिंसा) में फंस कर दीन-दुनिया से हाथ धो बैठता है। यह ही हालत जीव को घोर नर्क दिखलाती है।"

"खुदी यानी अहंकार से निजात हासिल करें, समता के विचार से। यह बड़ा आसान मार्ग महापुरुषों ने बतलाया है।"

"समता के बगैर इखलाकी और रूहानी तरक्की नहीं हो सकती और यह समता भाव आज से कुरा हवाई (सारी सृष्टि) में फैल गया है। आहिस्ता-आहिस्ता पवित्र अन्तःकरण वालों के हृदय में असर करेगा। समता के आधार पर ही देश और दुनिया की तरक्की कर सकेंगे और कोई रास्ता नहीं आता (महाराज जी ने मई, 1940 में लिखा)।

3. असली खुशी-शाश्वत शान्ति

"असली खुशी जो हमेशा दायम कायम (स्थिर) रहने वाली है और तमाम जरूरतों से बालातर (ऊपर) है, वह आत्मशक्ति यानी संसार की जो जिन्दगी है, हरेक कालब (शरीर) के अन्दर चमक रही है। ज़र्रा - ज़र्रा (कण-कण) उसकी ताकत से खड़ा है। इसी को मरकज़ या मसदर (केन्द्र-बिन्दु), ईश्वर शक्ति कहा गया है। इसी ताकत को हासिल करने से इस दुनिया के गहरे अज़ाब (महान दुःख) से जीव शान्त होता है।"

"अन्दर तो सब के वह ताकत मौजूद है। मगर जीव उसको पहचान नहीं सकता क्योंकि अपनी ख्वाहिशों की गिरफ्तारी इसको इधर-उधर भरमाती रहती है। जिस वक्त अपनी ख्वाहिशों पर काबू पा लेता है, उस वक्त अन्दर सत् आन्नद को प्राप्त कर लेता है। फिर तमाम कैदों से रिहाई पा जाता है। इस हालत को परम धाम या मेराज कहा गया है। सबका आखिरी अंजाम (अन्तिम लक्ष्य) वह ही जगह है यानी अपना सत् स्वरूप जो हमेशा की खुशी और पूर्ण है। हरे एक मानुष को इसकी तलाश करनी चाहिए। वह ही इस जिन्दगी का फल है। अगर उसको हासिल नहीं किया तो अन्त को निराश ही दुनिया से चला जायेगा।"

"सब मजहबों के राहनुमाओं (पथ-प्रदर्शकों) का यह ही मकसद (उद्देश्य) था कि जीव नाशवान संसार में आकर असली खुशी को हासिल कर लेवे। मगर उनके पीछे जो चलने वाले हुए, उन्होंने सिर्फ वाद-विवाद को हासिल करना ही सीखा जिसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया में अशान्ति अधिक हो गई। किसी ही नेक आदमी को उनकी असलियत का पता लगा कि जिस तरह उन बुजुर्गों ने नेक ऐमाल (शुभ कर्म) धारण करके राहते-अब्दी (शाश्वत शान्ति) हासिल की, उसी तरह मुझ को भी कोशिश करके रास्ती

(सच्चाई) की तलाश करनी चाहिए। वह ही इन्सान असली मकसद को जानने वाला है। इसके बगैर सब ज़हालत और खुदगर्ज़ी का मुकाम दे असलियत की तहकीकात करना सबका फर्ज़ है। महज़ बुजुर्गों की बुजुर्गी से निजात नहीं मिलती, जब तक कि अपने अन्दर नेक उसूल न धारण किये जाएं।"

"जीव शरीर की कैद में आकर पन्थ और मज़हब का अभिमानी हो जाता है। दर असल (वास्तव में) जीव का कोई मज़हब नहीं। जीव को बन्धन सिर्फ अपनी कल्पना का ही है। कल्पना को ही माया या भ्रम कहते हैं। निर्बन्ध अवस्था में असली खुशी और आन्नद है। इसी तत्व को "समता" कहते हैं। यानी हर हालत में पूर्ण। तमाम संसार का वही जगह मर्कज़ (केन्द्र) है और जीव की आन्नदमयी हालत भी वही है और सत्पुरुषों की सार प्राप्ति भी वही है। "तमाम दुनिया का फल्सफा और तहकीकात (दर्शन और खोज) आखिर जीव को शान्ति की तलाश दिखलाता है। जिसने अपनी जिन्दगी को पवित्र नहीं किया, सत् विचारों को धारण करके, वह महज पशु ही जाने। तमाम महात्माओं की तहकीकात यही है कि जिन्दगी के होते हुए असली खुशी समता को हासिल कर लेवे जिससे जीव का सब अज़ाब (दुःख) दूर हो जावे।"

"असली खुशी का मम्बा (स्रोत) जीव के अन्दर है। मगर बगैर अंतःकरण की शुद्धि के कोई इसको हासिल नहीं कर सकता। अपनी गुमराह और मुनकर अक्ल (भटकी हुई और नास्तिक बुद्धि) को उस मालिक की तरफ रजू (प्रवृत्त) किये बगैर कभी भी असली खुशी नहीं मिलती है। यह दुनिया एक गहरा हजाव (पर्दा) है। रोशन जमीरी से ही समझ में आ सकता है, नही तो हजाव को ही खुशी मानकर हर वक्त जीव परेशान रहता है। किसी हालत में भी असली शान्ति को प्राप्त नहीं हो सकता।"

"जिस पन्थ या मज़हब में जो है वह अपनी जिन्दगी को सही उसूलों पर ले जाकर राहते अब्दी हासिल करे। यह असली कोशिश उस मज़हब की और उसके पेशवाओं (प्रवर्तकों) की हिदायत उसको हो रही है।"

"जिसने सही कोशिश करके अपनी गफलत (अज्ञानता) का इलाज नहीं किया, वह किसी मज़हब को अख्तयार करने से कभी खुशी हासिल नहीं कर सकेगा। तमाम मज़हब और पन्थ यह ही बतलाते हैं कि इस फ़नाह होने वाली दुनिया (नश्वर संसार) में आकर लाफ़ानी हस्ती (अनश्वर शक्ति) की तहकीकात करो जो असली खुशी है और रंज व गम से बालातर (ऊपर) है। अपनी जिन्दगी को हर वक्त साबर व साकन (धीरजवान और निश्चल) हालत की तरफ रागब (प्रवृत्त) करना ही असली धर्म है और तमाम बुजुर्गों का जीवन यही ही है। हर एक मनुष्य को चाहिए कि ख्वाबे गफलत (अज्ञानता के सपने) से मुख्लसी (मुक्ति) हासिल करे और समता धर्म में अपने आपको वक्फ (समर्पित) करके समता आन्नद को प्राप्त करे जो इस जीव का असली मुकाम है। हर वक्त सही कोशिश अख्तयार करना ही असली खुशी को देने वाला है।

"मनुष्य का जन्म असली खुशी को हासिल करने की खातिर हुआ है, जो समता का पूर्ण रूप है। इसलिए हर घड़ी अपनी मूर्खताई को छोड़कर सत्त्वरूप आत्मा का विश्वासी और अभ्यासी होना चाहिए। दुःख सुख ईश्वर की आज्ञा में जानकर धीरजवान रहना चाहिए। यह ही असली कल्याण का मार्ग है।"

"जिन्दगी को जिन्दा करना चाहिए। असली खुशी को तलाश करना चाहिए। बेजारी से छूटने की कोशिश करनी चाहिए। असलियत की तहकीकात (खोज) करनी चाहिए। अपनी जिन्दगी को खुशबूदार बनाना चाहिए। प्राणों के होते हुए निर्भय अविनाशी अवस्था को प्राप्त कर लेना चाहिए।"

(ग्रन्थ श्री समता विलास ने)

4. आध्यात्मिक उन्नति के

मुख्य साधन

महाराज जी ने आत्मिक उन्नति के पांच मुख्य साधन बतलाये हैं :

सादगी

इस साधन को धारण करने से मनुष्य बहुत गैर-जरूरी ख्वाहिशात (अनावश्यक कामनाओं) पर काबू पा जाता है। लिबास, खुराक और विचार को सादा करने का नाम सादगी है... लिबास सादा से प्रेम बढ़ता है। आजजी (नम्रता) आती है... अदब (सभ्यता) हासिल होता है और थोड़ी आमदनी में गुज़ारा हो सकता है। जरूरतों की ज्यादाती पाप करने की तरफ रागब करती है ... बड़ी से बड़ी कोशिश करके सादगी के जीवन को अख्तयार करना चाहिए। असली खुशी का राज (रहस्य) इसी में है।

खुराक सादा खाने से सेहत अच्छी बनती है। बुद्धि निर्मल होती है और मन की वासना पर काबू पाने की शक्ति प्रकट होती है।

विचार की सादगी यह है कि हर एक से निष्कपट होकर विचार करना। दिल में बुग़्ज (द्वेष) न रखना। साधारण गुफ़्तगू (वार्तालाप) करनी जिसमें पखवाद (पक्षपात) न होवे।

सादगी का नियम असली जिन्दगी की बुनियाद है। इस वास्ते अगर कोई अपने गुनाहों से मुख्लसी (पाप-निवृत्ति) चाहे या राहते-अब्दी (सत शान्ति) की तलाश करे तो पहले सादगी को दृढ़ विश्वास करके धारण करे।

सत्य

सत् के मानी (अर्थ) ये है कि जो चीज हमेशा दायम कायम (स्थिर) है, उसकी तलाश करने की कोशिश करनी और उसके मुताबिक (अनुसार) अपने जीवन को बनाना। हर एक बात का सही विचार करना, हर एक बात को सही अमल में लाना। अपना बोल-तोल हर पहलु में सच्चा रखना... जो बात दिल में होवे, वह ज़बान से कहनी। यह सत् का स्वरूप है।

सत् एक ईश्वर है.. बड़ी से बड़ी कोशिश करके सत् विश्वासी होना चाहिए। जब तक अपनी अक्ल पापों की गिरफ्तारी में है, तब तक कभी भी सत् के स्वरूप को अनुभव नहीं कर सकता।

जिसने दुनिया को नापायदार (नश्वर) जाना है यकीन करके, और अपनी गफलत को छोड़ने की कोशिश हर वक्त करता है, वह ही सत् का मुतलाशी (जिज्ञासु) है। एक दिन वह असली खुशी को हासिल कर लेवेगा।

सत् की तलाश किसी खास मज़हब की पाबन्द नहीं है। सत् का सबक (पाठ) अन्दर से कुदरत (प्रकृति) दे रही है। मगर ज़हालत से पता नहीं लगता।

हर वक्त अपनी ज़मीर (अन्तर आत्मा) को सच्चाई में रागब रखना चाहिए। किसी भी वक्त असत् भावना न पैदा होने दें। तब सत् का असली जज़बा मिलता है।

सेवा

निष्काम सेवा मनुष्य जिन्दगी का मेराज (सर्वोच्च लक्ष्य) है। जिस तरह से पवन, पानी, धरती, सूरज और चन्द्रमा अपने फ़र्ज को जानकर हर वक्त सेवा में मसरूफ़ (व्यस्त) रहते हैं, उसी तरह से मनुष्य को भी लाज़म (अनिवार्य) है कि अपना फ़र्ज जानकर हर वक्त दूसरे की सेवा करें। तब ईश्वर के हुक्म को मानने वाला हुआ...

अपने धन को यथार्थ अधिकारी की सेवा में अर्पण करना चाहिए।

अपने तन को दुखी दीन अनाथ और लोक सेवा में लगाना चाहिए। अपने मन को काबू करके ईश्वर के चरणों में जोड़ना चाहिए।

सेवादार के अन्दर अधिक गुण प्रगट होते हैं, यानी प्रेम, एकता, निर्माणता, त्याग, वैराग्य, शील, सन्तोष आदि।

जो भी खुलासी चाहे या सच्चे धर्म ईमान का मुतलाशी (जिज्ञासु) होवे, वह सेवा मार्ग को धारण करे। सब सुखों की सार और बुजुर्गों का जीवन सेवा ही है।

सेवा का पूर्ण स्वरूप यह है कि अपना फर्ज करके दुखियों का दुःख निवारण करे। मन में कामना बिल्कुल न रखे और यह विचार दृढ़ करे कि किसी का भला हो जावे तो बेहतर है। इस दुनिया से एक दिन चलना जरूर है।

सत्संग

सत्संग का पहला उसूल इकट्ठा मिल कर बैठना। दूसरा अपनी बेहतरी के जरिए (साधन) विचार करने। तीसरे असली धर्म का विचार सुनना। तमाम बुजुर्गों की जिन्दगी के हालात से वाक्फी (जानकारी) हासिल करना। चौथे इस संसार में आने का यथार्थ लाभ विचार करना। पांचवे हर एक विघ्न निवारण करने का भाव पहचानना और सत् धर्म में जागृति हासिल करना। छठे, अन्ध-विश्वास से निजात हासिल करनी और सातवें अपनी गिरावट के कारण को विचार करना और दिखावे से मुख्लसी हासिल करनी और भी कोटा कोट फायदे हैं।

हर एक मज़हब के राहुनुमा की इज्जत करनी और उनके शुभ जीवन का आदर्श धारण करना और अपनी आत्मिक उन्नति करनी, यह समता का सत्संग है।

जहालत, तुअस्सब, (धर्माधता) वादमुवाद, (वाद-विवाद), खुदगर्जी, सब सत्संग में आने से खत्म हो सकते है।

सत् सिमरण

सब इबादत, रयाज़त (तपस्या) भक्ति, योग, सत् सिमरण ही है... कर्म में निहकर्मता सत् सिमरण से ही है।

सत् सिमरण जो मन से किया जावे, वह श्रेष्ठ है... जबान से जाप करने से या बुलन्द आवाज करके जाप करने से नाम का असर उड़ जाता है। ईश्वर को मालिक जानकर जो प्रेम से सिमरण करता है, वह ही सिमरण योग को प्राप्त होता है। जिसे याद करता है, उससे मिल जाता है... ईश्वर के नाम की अपार वडियाई है। जिसको प्राप्त हुई, वही जान सकता है। जबान बयान नहीं कर सकती और कलम तहरीर (लिखना) नहीं कर सकता। अति ही आश्चर्य का मुक़ाम है। अपने अम्ल (क्रियात्मक जीवन) करके ही हासिल हो सकता है...

आत्मिक उन्नति के पांच मुख्य साधनों पर 'ग्रन्थ श्री समता विलास' में प्रकाशित वचनों में से कुछ एक वाक्य अभी हमने पढ़े। इसी ग्रन्थ में दूसरे स्थान पर श्री महाराज जी ने पांच समता सत् नियमों की चर्चा की है, जो संक्षेप में इस प्रकार है

(1) **सत्संग** - सत्संग का रोजाना धारण करना अधिक सुखदाई है क्योंकि विवेक इससे अधिक प्राप्त होता है और विवेक के बल से अपने पापों से निवृत्ति सहज ही हो जाती है। सत्संग शुद्ध रीति से होना चाहिए, यानी निर्विषाद और निर्माण भाव जिन विचारों से प्राप्त होवे, वही सत्संग निर्मल है।

(2) **अभ्यास**- समता आन्नद प्राप्ति की खातिर अभ्यास अधिक जरूरी अभ्यास में वक्त की पाबन्दी और अधिक दृढ़ता होनी चाहिए। यानी, रोटी (भोजन) खाने से भी अभ्यास को लाज़मी (अनिवार्य) समझना चाहिए

(3) **सेवा** - निष्काम भाव से अपनी कमाई का दसवन्ध (दसवां हिस्सा) धर्म मार्ग में खर्च जरूरी करना चाहिए। अगर कुछ ज्यादा बचत हो तो पाचवां हिस्सा तक भी...

(4) **व्रत** - हप्ता (सप्ताह) में एक व्रत रखना चाहिए। अगर इतनी कुरबानी न हो सके तो माहवारी एक व्रत रखना चाहिए।

(5) **तप** - अगर किसी को ज्यादा फरागत (अवकाश) संसारी कामों से प्राप्त हो जाये तो उसको कुछ-कुछ वक्त तप में भी रहना चाहिए। यानी एकान्त सेवन, थोड़ा बोलना, थोड़ा खाना और ज्यादा अभ्यास करना चाहिए, यानी अपनी आत्मिक उन्नति की खातिर अधिक दृढ़ता धारण करनी चाहिए। पहले अपनी आदत के मुताबिक घण्टों की आजादी, फिर दिनों की ओर हफ्तों तक एकान्त सेवन करके आत्मानन्द को प्राप्त करना चाहिए। सही आत्मिक उन्नति जिन्दगी का एक बड़ा अहम (महत्वपूर्ण) पहलु है। मगर आम जिन्दगी से सम्बन्धित कुछ और भी बिन्दु हैं जिन पर श्री महाराज जी ने प्रकाश डाला है। इनका सही विचार आध्यात्मिक उन्नति में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

तीर्थ

तीर्थों पर जाने से गुज्रता जमाने (प्राचीन काल) और गुजरे हुए बुजुर्गों के जीवन से कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। सबसे बड़ा तीर्थ आत्म स्वरूप है जो घट-घट व्याप रहा है। उसके जानने से सब जलन नाश हो जाती है। मूल तीर्थ ईश्वर विश्वास है। मां, बाप, बुजुर्गों और हमसाया (पडौसी) की प्रेम करके सेवा करनी बड़ी तीर्थ यात्रा है।

दान - फर्ज करके यथाशक्ति सेवा करनी। सबसे बड़ा दान निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए खर्च करना है।

- शिक्षा का प्रसार ।
- बीमारी का इलाज और रोकथाम ।
- खाना और कपड़ा हर जरूरतमन्द के लिए

- अच्छे इखलाक के खुदाप्रस्तों और उल्लमा (सदाचारी भक्तों और विद्वानों) की सरप्रस्ती (संरक्षण)
- गरीबों और यतीमों (अनाथों) की मदद और उनकी तरक्की ।
- रफाए आमां (लोककल्याण) के काम आदि ।

बुत प्रस्ती (मूर्ति पूजा) – ‘बुत प्रस्ती से वाहदत प्रस्ती (एक ईश्वर पूजा) की तरफ मन को ले जाना चाहिए ।’ "सत्पुरुषों का ज्ञान स्वरूप जो उनका सच्चा जीवन था, वह पूजने योग्य है।"

"जिस भी बुजुर्ग का चित्त में विश्वास होवे, उस बुजुर्ग के अन्तरज्ञान को धारण करना उसकी असली पूजा है।"

गलत (अनयुक्त) पूजा- "अनेक प्रकार की भावना रख कर अनेक देवी-देवताओं की पूजा करनी सख्त जहालात (भारी मूर्खता) है और विकार को देने वाली है।"

- कर्म चक्र से जीव को सजा और जजा मिलती है, देवी देवता क्या कर सकते है ? इस वास्ते उनकी पूजा भी गिरफ्तारी है। अधीरता और भ्रम को बढ़ाने वाली है।"

- देवी देवताओं की पूजा ईश्वरीय विश्वास और सत् पुरुषार्थ को नाश करने वाली है।"

- ईश्वर की भक्ति से सब देवी-देवता अधीन हो जाते हैं।"

भूत-प्रेत- 'इनका कोई स्वरूप नहीं। सिर्फ मन का वहम है फर्ज किया (मान लो कि) स्वरूप अगर हो भी तो भी जीव की अपनी कल्पना अनुसार है ।"

हर वक्त एक ईश्वर का विश्वास रखना चाहिए। अपने कर्मों को श्रेष्ठ करना चाहिए । ईश्वर के नाम पर दान देना चाहिए । भूत-प्रेत वगैरह की कल्पना से दूर रहना चाहिए ।

दुनियावी रिवाज - शादी मौत की रीति बिल्कुल सादा तरीके से अम्ल में लानी चाहिए।

नुमायशी ज़िन्दगी - को बिल्कुल त्याग करना चाहिए। ..बड़ी से बड़ी कोशिश करके सादगी के जीवन को अख्तियार (धारण) करना चाहिए। असली खुशी का राज़ इसी में है ।

वक्त की पाबन्दी (समय पाबन्द) - समय की पाबन्दी को बिल्कुल ज़रूरी समझ कर हर एक दुनियावी कार्य और परमार्थिक कार्य समय पर करना चाहिए यानी सोना, जागना, खाना, पीना, सत्संग, दान, तप, भजन वगैरह (आदि) समय के अनुसार होने चाहिए।

नियम से पारित होने पर - श्री समता विलास में आत्मिक व सामाजिक उन्नति के निर्मल नियमों के तहत एक वचन में महाराज जी फरमाते हैं।

'अगर कोई प्रेमी किसी नियम से पतित हो जावे तो उसके साथ इन्तहा दर्जे का प्रेम करके उसका सुधार करना चाहिए। क्योंकि अधिक से अधिक मलीन बुद्धि प्रेम के जल से एक छिन में शुद्ध हो जाती है। यह परम साधन है। उसके उलट उसके साथ नफरत करनी या तौहीन करनी हानिकारक है...यह प्रेम ही सब त्रुटियों की औषधि है...'”

5. सदाचार

श्री महाराज जी ग्रन्थ " श्री समता विलास" में समझाते हैं :

- सत् केवल ईश्वर यानी जीवन शक्ति ही है...प्रभु परायणता ही सदाचार का स्वरूप है... जब तक बुद्धि देह परायणता में रहती है, तब तक निर्मल सदाचार को कभी प्राप्त नहीं हो सकती... नाना प्रकार के विकारों को कल्पित करती रहती है कभी-कभी कर्म स्वरूप हो कर प्रगट हो जाते है... जो जब तक पांच विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की वासना शुद्ध न हो तब तक सदाचार होना अति कठिन है और जब तक सत्स्वरूप ईश्वर का पूर्ण विश्वास और सत् निदिध्यास न प्राप्त होवे, तब तक इन विकारों की अग्नि शान्त नहीं हो सकती ।

- सदाचार यानी सत् में आचरण करना तब ही हो सकती है, जब केवल सत्स्वरूप ईश्वर को ही सत् करके निश्चय में धारण किया जावे और तमाम प्रकृति जाल को असत् स्वरूप में देखा जाये तब मानसिक विकारों से निरोध प्राप्त होता है और बुद्धि निर्मल हो करके तमाम शारीरिक कर्मों में पवित्र स्वरूप से विचरती है।

- अगर कोई अपना कल्याण चाहे तो सबसे पहले अपना आचरण पवित्र करे ।

- अगर कोई अपनी उन्नति करना चाहे तो नित्य ही पवित्र विचारों को धारण करे ।

- जिस वक्त बुद्धि तत् आचरण में दृढ़ होती है, उस वक्त तमाम दोष खुद बखुद ही नाश हो जाते हैं जैसे प्रकाश के होने से अन्धकार का अभाव हो जाता है।

- हरवक्त शारीरिक पात्रा के सही भेद को समझ करके तमाम विलक्षण कर्मों का त्याग करना ही उच्च जीवन है। इस वास्ते अधिक से अधिक यत्न करके नुमायशी और ऐयाशी (भोगमयी) जीवन का त्याग करना, तमाम मुनश्यात (मादक द्रव्यों) का त्याग करना और कुसंगत से परहेज रखना और नित्य ही प्रभु चिन्तन में मनोवृत्ति को लगाना ही परम शुद्धि को देने वाला यत्न है।

ग्रन्थ श्री समता प्रकाश में महाराज जी ने सदाचार के दस लक्षण बतलाये हैं। हर लक्षण के सम्बन्ध में चार-चार चुने हुए शब्द इस प्रकार हैं:

सत् विश्वास यानी यकीने पाक

जिसके मन विश्वास नहीं, वह तो भूत शैतान ।
न करनी की सूझ है, न कर सके नादान ॥
 बेयकीना होयके, दीन दुनी दोए हार ।
 न दुनिया का सुख मिला, न अगली राह संवार ॥
पूर्ण प्रभ विश्वास से, जीव पाए सत ठौर ।
"मंगत" मिटे सब वासना, काल करम की दौड़ ॥
 झूठ भरोसा त्याग के, राखो सत् भरवास ।
 "मंगत" जगत को देख के, न भूलो प्रभ अबनास ।

सत् पुरुषार्थ यानी साची कोशिश

जा के मन उद्धम नहीं, सो दलिद्री जान ।
करनी तो कुछ न करे, मुख से बड़ा गुमान ॥
 सत् पुरुषार्थ धारियो, सत् लोक परतीत ।
 मन की मैल उतारियो, सुन साध बचन पुनीत ॥
सत् पुरुषार्थ धार के, जग से पाओ जीत ।

"मंगत" करनी कर चलो, जो तीन काल सुख देत ॥
उद्यम नर छोड़िए, जब लग देह में प्राण ।
"मंगत" उद्यम जो रखे, नित अधिक पाये सो शान ॥

सत् विचार यानी साची सोच

जिसके अन्दर सोच नहीं, सो तो कुफ़र शैतान ।
कबीराह करे गुनाह नित, खसलत धर हैवान ॥
बिन विचार न पा सके, दीन दुनी की सार ।
गफलत में ही मिट जाए, जैसे धुआ अंबार ॥
करम देवे न फल कोई, जो कीजे बे सोच ।
जतन अकारथ सब जाए, बैठा सरको नोच ॥
समझ सोच कर पालियो, होवे मुशकत पूरा
चले हुक्म उस्ताद ले, "मंगत" मिले हुजूर ॥

निर्मानता यानी आजजी

रहमत रब की पाए के, मत कीजो अभिमान ।
अन्दर तेरे वस रहया, सब कुछ करे पहचान ॥
धन जोबन और माल सब है तिस की नित दात ।
अपना तो कुछ न भया, मान करे कमजात ॥
कुफ़र काम शैतान का, आजज़ मानुष जात ।
बन्दा करे गुमान जो कीजे सो अपना घात ॥
भूल कर न कीजिए, कूड़ी देह का मान ।
"मंगत" एक ही पलक में उड़ जाए धूल समान ॥

परोपकार यानी नेकी

इस दुनिया में आये के, खाट चलो कुछ लाभ ।
आगे बड़ी सरकार है, देवें पूरा हिसाब ॥
यह लाभ इस संसार में, जानया चतुर सुजान ।
"मंगत" मन उपकार हो, हाथों से हो दान ॥
मारग पर उपकार का, जीवन करे सुचेत ।
प्रभु चरण विश्वास हो, सब स्वार्थ मिटे विखेप ॥
मन से करे उपकार जो दीन दुखी के साथ ।
"मंगत" शोभा जगत करें, आगे बख्श देवे सो नाथ ॥

अपनी वस्तु पर सन्तोष

हक पहचाने अपना, पर हक देवे न चीत ।
हक पराया जो खाये, सो ही नर बदनीत ॥
पर नारी सम मात के, पर धन विष सम जान ।
पर निन्दा वड ताप है, तापे तीन जहान ॥
खेती और चाकरी में, पर हक करे पछान ।
शुद्ध कमाई जानिए, जो एसा निश्चय जान ॥
बिना सबर और शान्ति, दुनिया रूप अंगार ।
पाप करे बहु भान्ति के, जल-जल भये अन्धियार ॥

प्रेम यानी लागरज मुहब्बत

प्रेम के रंग में रंग लो, यह चोला चतुर सुजान ।
बार-बार नहीं पाओगे, उठ मारग खरा पहचान ॥

दोहे जहान बे हुरमती, जो पाये न प्रेम की सार ।
प्रेम बिना मानुष को, जानो ढोर गंवार ॥
छाडो अपनी खुदी को, सुनियो राह निजात ।
मानुष से देवत होय, जो मन प्रेम कमात ॥
सिद्ध तपीशर औलिया, नबी वली अवतार ।
एक प्रेम प्रीत से, "मंगत" भये निस्तार ॥

सादगी यानी सादा जीवन

जिसके मन में सादगी, साचा सादक सोये ।
अपना सुख दूजे देवे, माने रव रजाये ॥
जीभा की रसना माहीं, मत होवो गलतान ।
"मंगत" कूंडी नरक की, जीव करे हैरान ॥
निर्मल आहार नित कीजे, निर्मल पाइये विचार ।
"मंगत" महिमा साहेब की, तब चित करे चितार ॥
सादा खावन, सादा लावन, सादा बचन विलास ।
"मंगत" रहनी देव की, जो पाए तो पाप विनास ॥

सत्संग

सोहबत जैसी जिसकी, ऐसा होय रूप ।
बगला हंस के डार में, हो गया हंस रूप ॥
चोरी यारी रंग तमाशे, मन को इनसे ठाक ।
संगत कर सत् पुरुष की, मालिक पावें पाक ॥
मन में तो शैतान है, सच सोहबत से होए दूर ।
जब मन आया चान्दना, अन्धकार भयो काफूर ।
पानी ज्यों तरावत, देवत कुल संसार ।
"मंगत" साचे संग से, दिन-दिन सुख अपार ॥

मौत की याद

मरना मनो विसार के, पाप करे बहु भान्त ।
धार खुदी शैतान की, पावत न कभु शान्त ॥
 मुर्शद कामिल जगत में, एको मौत पहचान ।
 जिस मरना मन मानिया, करे न दूजे हान ॥
और का मरन देखता, अपना मरन भुलाए ।
यह ही गफलत धार के, बेहद पाप कमाए ॥
 इक मरना मन याद कर, दूजे साहेब की याद ।
 तीजे नेकी याद कर, मन्जूर होवे फरयाद ॥

दस भूषण सदाचार के, जो जन लेवे धार ।
तीन लोक का सुख मिले, मानुष देह बलिहार ॥
 जप तप संजम का फल ये ज्ञान ।
 सदाचार की आवे पहचान ॥
धरम करम की सकल ये सार ।
मन में आवे जो सदाचार ॥
 सत् करम सदाचार सरूप ।
 सकल मिटावे विखे की कूप ॥
मन तन में ठांड उपजावे ।
सदाचार की रसना जो पावे ॥
 सब की सार सब की तहकीक ।
 सदाचार जग साचा रफीक ॥
जितना जिसमें सदाचार समाए ।
इतनी ही तिसमें प्रभताए ।
 सदाचार है ज्ञान की सार ।
 सदाचार ले होए उजियार ॥
सदाचार है शिरोमनी, सत् मारग निरंकार ।
'मंगत' तिस में जो मरे, सो ही जान अवतार ॥

6. परम गति योग- हालते मेराज

- ग्रन्थ "श्री समता विलास" में कई जगह देश की प्रकाशक शक्ति का वर्णन आया है जो इसे सरजीवित रखती है। इस अध्याय में महाराज जी के कुछ एक विशेष वचन दिये जाते हैं जिनमें आपने ईश्वर भक्ति की प्राप्ति समता ज्ञान का रास्ता और समुचित प्रयत्न की बिना पर परम सिद्धि योग की अवस्था को प्राप्त करना संभव बताया है। प्रकाश की ये किरणें हमारे मन के अन्धकार को दूर करने और उसे प्रकाश की ओर बढ़ने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकती हैं, जो हमारा अपना वास्तविक स्वरूप है।

- "देह की प्रकाशक शक्ति जो सरजीवित करती है, उस परम तत्व का निश्चय ही इस माया के अन्धकार से मुक्ति देने वाला है" (42/37)

- "इस संसार का जो मरकजे कुल (केन्द्र बिन्दु) है या देह का साक्षी है, उस परम पुरुष का विश्वासी होना परम धर्म है। तमाम संसार की जो जिन्दगी है, जिसके प्रकाश से सब प्रकाशित हो रहे हैं और जो हमेशा है, खुशी और गमी (हर्ष व शोक) से जो न्यारा है उस परम पुरुष में प्रीति रखनी परम कल्याण के देने वाली है।" (44/42)

- "सब संसार जिसका स्वरूप है और अन्तर-बाहर त्रिण-त्रिण को जो प्रकाश कर रहा है, जिसके बगैर न कोई हुआ और न ही होगा, उसी परिपूर्ण परमेश्वर की प्राप्ति करनी ही असली मुक्ति और समता शान्ति है उस मालिके-कुल (सृष्टि के स्वामी) की याद करनी और अपने अन्तरविखे ध्यान करना ही असली भक्ति है।" (46/52)

- "कुल संसार का चक्र बुद्धि की कमी बेशी में चल रहा है। बुद्धि की लीन अवस्था ही सत्स्वरूप आत्मा है। बुद्धि की विचरित हालत ही कर्म फल की वासना है। विचरित हालत में कल्पना द्वारा संसार को अनुभव करती है और लीन अवस्था यानी समाधि में केवल आन्नद स्वरूप को अनुभव करती है।" (199/5)

- "सम बुद्धि यानी आत्मानन्द को प्राप्त करने की खातिर प्रथम ईश्वर सिमरण परिपक्व होना चाहिए। अन्तर्गत हृदय में नाम का सिमरण जो किया जाता है, वह असली सिमरण है। (210/1)

- "सबसे पहले सिमरण दृढ़ता, दूसरी हालत में भजन की प्राप्ति, तीसरी हालत में ध्यान और चौथी हालत में समाधि है। (213/10)

- "दृढ़ निदिध्यासन जब नाम का धारण किया जाता है, तब तमाम संकल्प-विकल्प अभाव हो जाते हैं और बुद्धि एक ध्यान में निश्चित होती है और द्वन्द की आसक्ति से निर्बन्ध हो जाती है। ऐसे दृढ़ अभ्यास की प्राप्ति से अन्तर में सत् शब्द आत्म जोत (ज्योति) अनुभव होती है। प्रथमें शब्द की अनुभवता नाभि स्थान में प्रतीत होती है। बाद में वह अखण्ड धारा ऊपर मस्तक के दरम्यान (बीच में) अनुभव होने लगती है। ऐसी स्थिति जब बोध होवे, जब बुद्धि शारीरिक कामनाओं से पवित्र हो करके आत्मस्वरूप में एक ध्यान होती है। जब ध्यान की ऐसी अवस्था अधिक परिपक्व हो जाती है तो मस्तक के ऊपर सुन्न शिखर (सिर की चोटी) में अखण्ड नाद अनुभव होता है तब बुद्धि दुर्मति छाया से पवित्र होकर अपने निज स्वरूप में विश्राम पाती है और तमाम शारीरिक दोषों से अलग हो जाती है और तमाम इन्द्रियों के भोगों से अचेष्ट होकर विचरती है। ऐसी अवस्था ही परम सिद्धि योग आरूढ़ता का स्वरूप है।" (565/116)

- "जब बुद्धि आत्मा का अन्तर में साक्षात्कार कर लेती है, तब शारीरिक क्रिया में निर्मान, निर्मोह, निष्काम, निर्द्वन्द्व होकर विचरती है यानी नित्य ही अपने में असंग और अलेप हो करके स्थित होती है और तमाम वासना के जाल से विलग हो जाती है। यह ही परम निःचलता है। जिसको प्राप्त होती है, वह सर्व कीर्ति योग्य पुरुष है।" (581/148)

● इस अध्याय में हर वचन के अंत में जो अंक दिये गये हैं, वह समता ग्रन्थ 'श्री समता विलास' (हिन्दी) चतुर्थ संस्करण का पृष्ठ/अनुच्छेद संकेत देते हैं।

सत वाणी

जड़ देही को जो सरजनहारा । सरव शकत सिमर करतारा ॥
देह विकार से न्यारा होई । चेतन परगास परमगत सोई ।
जब लग मन में शान्त न आई । परमगती कभू धाम न पाई ॥
जब सतनाम का टांक लगाया । मन विकराल तब घर मे आया ॥
देह के सुख से जब मन उकताये । आतम सुख की रसना तव पाये ।
आतम तत मे जब लीन हो जाई । आनन्दसरूप तब परमगत पाई ॥
परमगती सत शब्द अनूप । तिस का ध्यान हरे भ्रमकूप ॥
मनुआं राख शब्द के माहीं, घट में पवन को पियो ।
उलट दृष्टि आकाश पछानो, धार शब्द लख लियो ।
धारा माही ध्यान लगाओ, सत खण्ड वासा पाओ ।
निरमल परीत से नाम कमाओ, भव दुस्तर तर जाओ ॥
साचा शब्द पहचान निरन्तर, जो सुन्न के घाट समाया ।
"मंगत" जिस जन सेव पछानी, बोहड़ गर्भ नहीं पाया ॥

सत् साधन मूल

जत सत् त्याग चित रहे समाए । सत् तत विमल घट अन्तर पाये ॥
सत् साधन का मूल है नाम । गुरुमुख जपे पावे विसराम ॥
नाम ध्यान नाम ही योग । अन्हद नाद नाम का भोग ॥
मूल नाम सतगुरु बतलाया । अगम निगम की गम को पाया ॥

कुछ विधि संकेत

प्रथमे आसन सहजे बांधे । इन्द्री इस्थिर मनुआं खांडे ॥
मुख नयन जीभा को बांधे । साचा नाम हिये में साधे ॥
धीरे-धीरे पवन को पीवे । शुद्ध ध्यान में नाम जपीवे ॥
हकार साकार को एह विध मिलाए । बांधे पवन पच्छिम घर जाए ॥
मूल द्वार मे बन्ध लगाए । उलट पवन सत नाम कमाए ॥
स्वास सुरत मिल किया हलोल । नाभी अस्थान में पाई कलोल ॥
ईडा पिंगला सुखमन नाली । तीनों मिले ऊपर तिरनाली ॥
सुखमन नाली में पवन भरीजे । उमगे नाद माया गढ़ छीजे ॥
त्वास सुरत को पल पल जोड़े । अगम शब्द का चढ़े सरूरे ॥
सुखमन खुली शब्द घर जागा । साध सीख पाई बड़भागा ॥
चढ़े आकास खोल बंकनी नाली । गरजे शब्द भीतर तिरनाली ॥
आसन धरती सुरत आकासे , लखे ज्ञान निर्वाणी ।
उपजे शब्द जोत दरसावे , सुरत भई अकलानी ॥
ऊपर चढ़े शिखर को जाए । केवल नाद संग प्रीत कमाए ॥
सुन्न गुफा में करे ध्यान । अनहद गरजे सहज की तान ॥
सुरत समाई शब्द में , चढ़ी सुन्न के देश ॥
"मंगत" नजरी आया , आद पुरख जगदीश ।

(ग्रन्थ समता प्रकाश से)

7. विश्व शान्ति सन्देश

सन् 1952 का लिखा हुआ विश्व शान्ति संदेश ग्रन्थ "श्री समता विलास" का एक भाग है। भौतिकवाद की अनवरत गति पर नियंत्रण करने की उस समय जो चेतावनी दी गई थी, उसकी आवश्यकता आज की परिस्थितियों में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक है। अतः श्री सतगुरु जी के संदेश में से कुछ एक महत्वपूर्ण बिन्दु ले कर निम्न में दिये जा रहे हैं -

- "सही यत्न के बगैर परम शान्ति का प्राप्त होना नामुमकिन (असंभव) है इस जीवन रूप संसार को अच्छी तरह से समझ करके अपने आप को सही उन्नत करने का यत्न किया जावे जिससे जीवन का अंजाम (नतीजा) मुकम्मल (पूर्ण) शान्ति का सरूप हो जाए। "

- "तत्वों की खोज से अधिक से अधिक अस्वर्ज मुतालया (आश्चर्यजनक अध्ययन) प्रगट होते हैं। चूंकि अंजाम (अन्त) में परम दुख और नाश के देने वाले होते हैं, इनमें सत्शान्ति की प्रतीत रखना अति मूढ़ता है। सूरज, चन्द्रमा, पवन, पानी आदि ताकतों पर पूरा-पूरा कंट्रोल हो जाये तो भी अन्तर की बैचैनी और अधीरता से छुटकारा हासिल करना नामुमकिन है। इस वास्ते इन्द्रियों के भोगों के वश हो कर बाहर के तत्वों की तहकीकात (खोज) करके नये से नये सुख प्राप्त करने में बजाए शान्ति के अधिक से अधिक अशान्ति और भय ही प्राप्त होगा, यह निश्चय होना चाहिए जैसा कि आजकल की साइंस का असर हर एक के अन्तःकरण में हो रहा है बेरुनी (बाहिरी) तहकीकात यानी अधिक मादाप्रस्ती (भौतिकवाद) का नतीजा भयानक अशान्ति, भ्रष्टाचार अति छल कपट और अति नाश के देने वाला है।

- मादाप्रस्ती यानी इन्द्रियों के भोगों में अधिक आसक्ति ही परम नाश के देने वाली है। जिस वक्त आम मानुष ऐसे भोगमई जीवन में अन्धे हो जाते हैं,

उस वक्त अपने अन्तर में बढ़ती हुई तृष्णा की अग्नि अधिक उपद्रव की तरफ रागब (प्रेरित) करती है। तब साथ ही अपनी भी नाश हो जाती है।

- "ऐसे भोगवाद, प्राकृतवाद और नास्तिक जीवन के नतीजे को समझ करके अपनी गलत तहकीकात से बाहोश हो करके जीवन शक्ति की तहकीकात में यत्न करना चाहिए जिससे अन्तर में सत् शान्ति प्राप्त होवे और बाहर भी सत् शान्ति अनुभव होवे"

- "मादाप्रस्ती से कभी भी जरूरतों की अधिकता कम नहीं होती, बल्कि दिन व दिन (अनुदिन) बढ़ती जाती है और तमाम मानुषों में शत्रुपन का भाव प्रगट करती है मादाप्रस्ती, खुदप्रस्ती और भोगप्रस्ती के सैलाब (बाढ़) को रोकने की कोशिश करें। अपने अपने पवित्र आचरण और सत्यग्रही निश्चय से । अगर यह सैलाब रोका न गया तो इसका नतीजा एक निहायत विनाश की शकल अख्तियार कर लेवेगा और इस मादियत की चमक-दमक के जमाने को एक तारीकी (अन्धकार) की शकल कर देगा क्योंकि मादाप्रस्ती (MATERIALISM) का नतीजा अकसर ऐसा होता है"

"केवल सदाचार की दृढ़ता से ही अपने-आपको शान्ति प्राप्त होती है। ऐसे ही दूसरों को भी पवित्र आचरण की ठण्डक से सत् शान्ति प्रतीत होने लगती है। यह ही रास्ता अमन और शान्ति का है"

"जो सदाचार की उच्चता को नहीं समझते और ऐसा कहते हैं कि लोक सेवा में अपने ज्ञाती (निजी) आचरण की कोई जरूरत नहीं है। ऐसे सज्जन प्राकृत मार्ग में बिल्कुल अंजान हैं क्योंकि सबसे पहले एक दूसरे पर असर आचरण का ही होता है। "

- "हर एक मनुष्य अपनी सही मानसिक पवित्रता को प्राप्त करने की कोशिश करे क्योंकि सुख और सब विजय इसी में है और यह ही अमन और शान्ति का रास्ता है..."

- "सब मानुष मात्र में एकता प्रेम प्रगट होवे जिस करके निर्मल शान्ति से सब गुणी अपनी-अपनी जीवन यात्रा को मुकम्मिल कर सकें और इस समय को देवताओं का समय बना दें।"

8. कुछ और चुनिंदा उद्धरण

क. ग्रंथ समता प्रकाश से

संसार की रचना

प्रथम मनसा सहज उपजाई । बिना कारण रची रचनाई ॥
तीन गुण माया घर परगट कीनी । अनेक प्रकार रचना रच दीनी ॥
तेज वायु जल पृथ्वी आकाश । इन पांचों का सकल तमाश ॥
बुद्धि मन और अहंकार । आठ तत प्रगट रूप संसार ॥
अचरज माया गत होई बिस्तार । चार खानी रचया संसार ॥
चांद सूरज की अत जोती प्रकास । दिवस रैन प्रगटे पख रूत मास ॥

जगत का विस्तार

अरबां तारा मंडल आकास । अरबा पानी पवन बिलास ॥
अरबां दिवस रैन पख मास । अरबा वर्ष करें बिलास ॥
अरबां रवि चन्द्र परगासे । अरबा इन्द्र राज बिलासे ॥
अचरज खेल जगत बिस्तारा । अनन्त सरूप हो किया पसारो ॥
अचरज रचना जगत की , अलेख अभेद अपार ॥
"मंगत" गिनती न आवे, जुग-जुग करूं शुमार ॥

शरीर और आत्मा

काया कोठी अजब है साजा । जिसमें साहेब आप ब्राजा ॥
काया मन्दिर का जिस भेद लखाया । सत परमेश्वर तिस अन्तर पाया ॥
देह रूपी मकान में पावें लामकान ।
मिट्टी अन्दर देख्या , मालक तीन जहान ॥
काचे इस वजूद में , देखें लावजूद ।
"मंगत" हक परतीत रख , सब दर साहेब मौजूद ॥

आत्म पूजा

देह मिथ्या सत आत्म जाता । नाम सिमर के भयो रंग राता ॥
ज्यों-ज्यों मन आत्म को पूजे । मिटे विकार तृष्णा सब बूझे ॥
देह से भिन्न कर सत् तत सूझा । एको पछान से आनन्द घर बूझा ॥
निज सरूप में लीन समाई । आन्नद सरूप आतम दरसाई ॥
देह ममता को त्याग के , आतम पूजे जोए ।
"मंगत" मिटे चित कामना, पूरण ज्ञानी होय ॥

मन का जीतना

मन तृपती कारण करे नित जतना । भोगे भोग नित बढे कल्पना ॥
सत तरूप जब चिन्तन किया , गहरी प्रीत लगाए ।
तब इस मन को तृप्ती होई , मूल रोग दुख जाए ॥
मन जीता जग जीता , भयो शाहन का शाह ।
"मंगत" काटी करम गत , टूटे भरम अस्गाह ॥

अस्थिरता

धन जोबन न स्थिर रहे , न स्थिर रहे परिवार ।
ना स्थिर रहेगा तन ये , काचा चाम मंजार ॥
माटी का कलबूत यह , अन्त माटी समात ।
सरजनहार न जानिया , क्या बने पछतात ॥
यह संसार सराये है , जीव मुसाफिर नीत ।
"मंगत " खोज सत शान्ति, औध जात है बीत ॥

कर्म फल

जो बीजे सो काटना, एह निश्चय कर मीत ।
बिख बीजे, बिख पाइये, सुन साहेब की रीत ॥
ऐसा बीज न बीजियो, जो काटन में दुख देत ।
कर्म रेख अटल है, सुन साचा विवेक ॥
गुणी मुनी नहीं छूटते, जो बीजा सो खाए ।
तासो नर विचार के, साचा करो उपाए ॥

संकट हरण

एको प्रभ सब हरे सन्ताप । निर्मल चित से नित कर जाप ।
संकट हरण, मंगल का दाता प्रभ का नाम चितार ।
"मंगत" यतन यह सार है नित ही नित जप सार ॥
सरब परकाशी शक्त जो, मन में सदा अराध ।
"मंगत" दीन दयाल प्रभ, सब दूर करें अपराध ॥

विवेक

सत् विवेक यही परधान । साचे धर्म की आवे पहचान ॥
सत् विवेक यही सुख रास । पर उपकार में होये निवास ॥
बिना विवेक ना पा सके, दीन दुनी की सार ।
केवल सत विवेक से, होवे भ्रम दुख छार ॥
शोभा मानुष देह की, जो निरमल मिले विवेक ।
"मंगत" साधन सार यह, विसरो न घड़ी एक ॥

केवल पठन और कथन

पढ़ने से न रीझता, खलक का परवर्दिगार ।
जिस जन तिस को मानया, तिस जन हो छुटकार ॥
विद्या तो बहुती पढ़ी, पर सूझी न कुछ सार ।
विद्या को कहु दोष न, पढ़नहार गंवार ॥
कथनी से कुछ न बने, ख्वाहे कथ कथ थके जुग चार ।
"मंगत" करनी सार है, जो करे सो उतरे पार ॥

छुटकार - खुलासी

बन्ध खुलासी सहजें पाएं । जो चित प्रीत प्रभ नाम ध्याए ।
होए खलासी प्रभ रूप ध्याए । जां से उत्पत तां लीन समाए ॥
पीर पैगम्बर औलिया, सबका यही विचार ।
सिमरो साचे नाम को, अन्त पावें छुटकार ॥
बन्ध खुलासी जगत में, केवल मन परतीत ।
"मंगत" मन निहचल भया, भव से पाई जीत ॥

स्वार्थ और परमार्थ

स्वारथ और परमारथ दो मारग प्रगट भये ।
इक भोगे निज सुख को, एक पर को सुख नित दे ॥
पर सुख को जिस सेवया, तो चले जगत के जीत ।
निज सुत मोहित जो भये, तो रोवत चले हैं मीत ॥
तत पुरुषों की कीरती, नित मारग साच विचार ।
"मंगत" करनी से करो, जो जीव का करे उद्धार ॥

निर्भयता

खोज करो नित अभय पद मीता । जा को परत पावे शान्त पुनीता ॥
निरभय रूप नारायण एक । निरमल चित्त से राखो टेक ॥
भय को हरे, मंगल को देवे, जो सत्गुरु सीख विचारे ।
सत् सरूप मिले विश्वासा, सत नाम की रसना धारे ॥
निर्भय होय जीव तब, जब सत् सार कमाए ।
"मंगत" अन्तरगत माही, सत ठाकुर दरसाए ॥

मनुष्य जन्म की महानता

निज सरूप की कीजो खोज । दुरलभ जनम की पाओ मौज ॥
मानुष जनम की दुरलभ कार । आतम देखे विच काया मजार ॥
मानुष जनम की यह है सार । सत् सरूप मिले करतार ॥
जा से आया ता जाए समाए । दुरलभ जनम में यह कार कमाए ।
मानुष तन को पायके संत मारग ज्ञान विचार ।
"मंगत" समता शान्ति तत खोज परम पद सार ॥

सत् सम्पत्ति-सच्ची दौलत

सत् सम्पत् प्रभ नाम विचारी । निरमल निश्चय अन्तर्गत धारी ॥
निश्चल ध्यान चित अन्तर पाई । सत् सरूप की रसना खाई ॥
साची पूंजी गुर ने दीनी । मोह माया की भरमन छीनी ॥
सत् पुरूषों की यह साची सीख । केवल सत प्रभु रूप अलेख ॥
सत् सम्पत् हरि नाम है, छिन छिन लयो चितार ।
"मंगत" आवन जगत में, हर जन का भयो बलिहार ॥

त्याज्य वस्तुएं और कर्म

भग, तंबाकू, मदिरा, चंडू गांजा जोय ।
चरस अप्पून रिश्चत तजे, तो ही शूरा होय ॥
चोरी, जुआ, कपट छल चौपट ताश शतरंज ।
सिनेमा, थियेटर, जामनी, नित देवे जीव को रंज ॥
आलस निद्रा त्याग के पर की सेव विचार ।
"मंगत" देही चाम की, एक दिन होवे छार ॥

बैर का त्याग

बारम्बार विचारिया, जग रहना नाहीं मीत ।
वैर बदी को त्याग के सब से राखो प्रीत ॥
प्रेम साहिब का रूप है, सकल मिटावे ताप ।
मन-मन आवे शान्ति, बढे अधिक परताप ॥
जतन जतन कर राखियो, साचा एक प्यार ।
"मंगत" मिटे सब दूषना, जब संगत साच विचार ॥

ममता का त्याग

निरमल जुगती करो विचार । मोह माया का मिटे अंधकार ॥
देह की ममता विकार परकासे । साखी पूजे समता चित भासे ॥
मन के औगन तब ही जायें । झूठ देही का जब मोह मिटायें ॥
मिथ्या मोह माया का जाई । सत् विश्वास आतम घर पाई ॥
मन की ममता नास होवे, जब सत् रहनी चित पाए ।
"मंगत " पूरण जतन से, करम जाल बिनसाए ॥

पांच विकारों का त्याग

पांच विकार महा दुखदाई, जले सकल संसारा ।
परमारथ परतीत बिन, नहीं जीव पावे निस्तारा ॥
पांच विषय का मूल विनासे, जब आतम तीरथ नहाई ॥
दुर्मत त्याग सुख सहज समाये, परम गति सो पाई ॥
मिथ्या देह विकार अत, तृष्णा अगन बढ़ाए ।
"मंगत" सो जन मुक्ता भये, जो नाम जपें सुखदाए ॥

शुद्ध आहार

जो कोई अपना जीवन सुधारे । शुद्ध आहार मन माहीं विचारे ॥
सत् पुरषारथ रहनी सत् पावे । सूक्ष्म आहार शुद्ध रूप का खावे ॥
आहार पवित्तर अपरम गुन देवे । पवित्तर आहारी प्रभचरण को सेवे ॥
मदिरा मांस का जो नित आहारी । बुद्ध चण्डाल तिसमें विस्तारी ॥
खट्टा, मिट्टा तीखना चट पटा नित खाए ।
"मंगत" दीरघ वासना, मन को नित भरमाए ।

दूसरों से बर्ताव

मीठा सबसे बोलिए, रखिए सब से हेत ।
नारायण सर्वज्ञ हैं, रमया सब के नीत ॥
पर निन्दया पर हान को, मन से कीजो दूर ।
परहित जीवन धर्म में, मन कीजो मखमूर ॥
जप तप का फल एह नरा, जे सीतल आवे मत ।
"मंगत" सीतल बोलना, परम गुणों का तप ॥

कुछ और गुण

सत सील सन्तोष, दीनता और पर उपकार ।
"मंगत" मारग मुक्त का, प्रेम से लीजो धार ॥
मान मध और ईरषा, जो चित्त से करे त्याग ।
"मंगत" भाओ दीन में, प्रभ भगती रंग लाग ॥
खिमा, दया और बन्दगी, साचे प्रभ का भेख ।
"मंगत" हरे विकार सब, पाए आन्नद अलेख ॥

शुद्ध व्योपार

नफा समान खर्च करे, बचत कीजिए नित ।
लक्ष्मी की आदर करे, फजूल ना त्यागे मित ॥
शुद्ध करें व्योहार को, नफा लियो समान ।
थोड़ी लियो ब्याज नित, धन न पावे हान ॥
शुद्ध व्योहारी पुरुष जो, अघट लक्ष्मी पाए ।
"मंगत" सत व्योहार में, लक्ष्मी वास कराए ॥

सेवा

सेवा को धारण करे, मन में आवे धीर ।
निरमल धारा प्रेम की, चित परसे अति गम्भीर ॥
सत सेवा हिरदय धरो, बिरछों की मत ले ।
धार भाव निष्काम को, फल छाया और को दे ॥
तन मन धन अर्पण करे, पर के हेत जो मीत ।
"मंगत" मारग धर्म में, सो पावे दृढ़ परतीत ॥

दया

दया जुगत इक धार है, अमृत मारग जान ।
अपना सुख सौंपे सभी, तब होवे दयावान ॥
दया धर्म अस्त्र से, भव मारग ले जीत ।
अपनी सम्पत सौंपकर, पावे वस्त पुनीत ॥
दया धर्म सन्तोष मत, वस्त परम गुणवान ।
"मंगत" सीतल बोलना, मिटे भरम तन मान ॥

धर्म

सत् धरम का सुनो निधान । मानुष जीवन को देवे कल्याण ॥
शान्त मारग जो जतन लखाई । धर्म सरूप जानो गुणी राई ॥
जिस जतन से मन निरमल होई । सो साधन नर धर्म कहलाई ॥
जिस वस्तु से मन तृप्ताए । निरना धर्म का सो वस्त कहलाए ॥
धर्म का रूप न जीव कोए, न कोई मजहब और पन्थ ॥
"मंगत" यतन जो मुक्त का, सो धर्म कर वाचें ग्रन्थ ॥

जो तेरी आज्ञा प्रभु भावी

प्रभ आशा में बिचरिए, होए ताप सब दूर ।
जीवन मे जीवन मिले, नित आन्नद सरूर ॥
सकल मनोरथ त्याग के प्रभ आज्ञा चित धारी ।
जो बरतावे सुख कर पूजे, यह छूटन राह सुखकारी ॥
हर मिमरण निर्माण स्वभाओ, सत् सेवा चित पेख ।
आशा प्रभ में विचरिए, सुन जीवन मुक्त का लेख ॥

साची भक्ति

साची भगती मन देवे आन्नद । सिमरे नित ही परमानन्द ॥
बिना भगत नही मन निरभय होए । जतन जतन कर जीवन को खोए ॥
सकल दोष हरे सन्ताप । हर की भगत जिस कीनी जाप ॥
मीरा बाई सदन कसाई । हर की भगत से सब संकट जाई ॥
साची भगती प्रभ चरण की, जब मन आन समाई ।
"मंगत" दुबिधा सब मिटी, जीव परम सुख पाई ॥

प्रभु परायणता

कारण कर्ता जान के, मन की चिन्ता त्याग ।
"मंगत" देह पिण्ड जिस दिया, रहो चरण तिस लाग ॥
निरमल टेक प्रभ चरण की, जिस जन लीनी धार ।
"मंगत" मिथ्या जगत में, तिस के भाग अपार ॥
पद परस नारायण का, जग पूरण काज संवारे ।
"मंगत" भयो मंगल घर माहीं, नित जाऊं चरण बलिहारे ॥

सत्

सत् ही जग का मूल है, सत ही करे परकाश ।
मिल सत सग खोजिए, सत नाम निरवास ॥
सत् के तुल नहीं तप है मीता, प्रेम तुल नहीं ध्याना।
तुल सतसंग नहीं और उपाय, जो देवे जीव कल्याणा ।
सत् ही मन में सिमरिये, सत् की पाइये रास ।
"मंगत" सत् परतीत से, मिटी भरम की फांस ॥

सत् सिमरण

सिमरण पूरण योग है, सिमरण पूरा ज्ञान ।
सिमरण के परताप से, देह का तजे गुमान ॥
प्रभ का सिमरण सार है, सन्ता करी पुकार ।
एक घड़ी न विसरे, सो आन्नद भंडार ॥
सिमरण पूरा ज्ञान है, सिमरण पूरण विवेक ।
"मंगत" एह विध सिमरिये, विसरे घड़ी नहीं एक ॥

निष्काम कर्म

निष्काम कर्म मनोरथ सब नासे । प्रभ आज्ञा में करे निवासे ॥
जो कुछ कीना तिस रजाई । तिस की परीत में आप गंवाई ॥
निष्काम कर्म करे जीव उद्धार, स्वारथ बुद्ध हरे अन्धकार ॥
कर्म फल इच्छया नहीं हिरदे राख । प्रभ की आज्ञा पल-पल चाख ॥
निष्काम कर्म को साधिए, परम जतन से मीत ।
"मंगत" मारग मुक्त का, यह सहज योग पुनीत ॥

प्रभु अनुराग

प्रभु अनुराग मुक्त पद मीत । प्रभु अनुराग करे निर्मल चीत ॥
प्रभु अनुराग जब चित आई । मोह विकार संसा सब जाई ॥
प्रभु अनुराग प्रभु पूर मिलाये । जनम-जनम का भरमन जाए ॥
प्रभु अनुराग कल्याण पद मीत । जो जन परसे, लेवे जग जीत ॥
सत् अनुराग प्रभु चरण का, जब चित आन समाए ।
"मंगत" दुस्तर जाल से, जीव शान्त तब पाए ॥

गुरु शिष्य

माया अत घना गुबार । बिन गुरु पाइये कभू नहीं पार ॥
गुरु बिन नहीं सत निश्चय आई । गुरु बिन नहीं सत भेद लखाई ॥
पाक मुर्शद पाक दिल होए । पाक मुरीद जो चित जोवे ॥
देह मस्जिद की गई तारीकी । मिल के मुर्शद पाई रमज़ हकीकी ॥
दीन बन्दगी दिल में बसी सुनी मुर्शद कदम सलाम ।
"मंगत" नबी गौस सब करें मुर्शद कदम सलाम ॥

सत्पुरुषों का कथा

सत् पुरुषों की कथा विचारो । पावें निर्मल ज्ञान सुखकारो ॥
सत् पुरुषों का आदर्श विचारी । आवे शान्त परम सुखकारी ॥
सत् पुरुषों की करनी परवान । सत पुरुषों की कहनी सुख जान ॥
सत् पुरुषों की रहनी मूल । भरम चक्र की काटे भूल ॥
सत् पुरुषों की कीर्ति, तन मन करे निहाल ।
"मंगत" नित सत्संग से, सत मारग लीना भाल ॥

शून्य अवस्था

अन्तर सुन्न पाया अस्थान । निरभय नाद की सूनी घर तान ॥
ता में सुरती भई लवलीन । अत परकाश लियो घट चीन ॥
शब्द ध्यान सुन्न समाध । शब्द का सिमरण हरे अपराध ॥
मन की मनसा शून समाई । शब्द ध्यान जब रग रगाई ॥
अन्तर शब्द पहचान के, मनुआं शून समाई ।
"मंगत" निज सरूप में, परम आन्नद को पाई ॥

सतपुरुषों की समानता

सब सिद्धन की सार सुन, सब गुनियां दा ज्ञान ।
सत् सरूप प्रभ एक ही, सब में भया परवान ॥
जैसे जिसने प्रीत करी, पायो सरजन हार ।
बन्धन से मुक्ता भयो, जग से भये आधार ॥
समा देश विचार के, नीति करे बखान ।
भेद भाव कुछ नहीं, केवल सार निधान ॥
होय मसीहा जापता, पिता रूप सम प्यार ।
अनन भगत घट उपजी, दरसा रूप आपार ॥
जान जिस्म निरना किया, जिस्म से भया अतीत ।
जान तत पछान के, सदा रहे रमनीक ।
राग द्वेश संशा गया, करम विकार विनास ।
सत्सरूप से मेला भया, जीव भया निरवास ॥
ऐसे जापे नाम को, गुणी मोहम्मद नीत ।
मित्तर सम प्रभु जान के, राखे हढ़ परतीत ॥

बीच रजाई त्यागया, सकलो करम विकार ।
दीन आजजी मे रमा, नफस दा किया शिकार ॥
परम त्यागी बुद्ध भया, सो तत जापे निरवान ।
काल करम संशा गया, बुद्ध निस्चल निरवान ॥
दुःख सुख प्राकिरत के, व्यापे नाही कोए ।
सारकला परगट भई, करम बन्ध सब खोए ।
परमारथ को सोधता, रिषभ देव इस भान्त ।
मन करम और वासना, सकले द्वन्द भ्रांति ॥
तिस से परे एक वस्तु है, नित ही शून्यकार ।
सकल से न्यारा तो रहे, अखण्ड तत निरंकार ॥
तिसमें बुद्धि जब गई, तब पावे बिसराम ।
जैन मत्त परगट कियो, दे साचा पैगाम ॥
जरूदशत विचारिया, अग्नी रूप भगवान ।
काल करम को भस्म करे, बुद्धि दे कल्याण ॥
अगन पुजावे जगत में कियो यह विचार ।
मत पारसो परगट किया, देके ज्ञान आधार ॥
सब ऋषियन की सार सुन, अध्यआतम विचार ।
वस्तु एक ही पूजते, नाना जुगत मन धार ॥
सब की सार को सुन के दृढ़ कीजे विश्वास ।
"मंगत" विचरे नाम में कटे करम की फास ॥

मुसलमानी भेद

श्री महाराज जी की अमृत बानी यों तो सभी लोगों का साझा कोष है, परन्तु निम्नलिखित वाणी में आप विशेष रूप से मुसलमान भाइयों को संबोधित करते हुए कहते हैं:

कुफ़र शैतान को करे हलाक । हिर्स हराम को देवे तलाक ।
दीन आजजी हुकम रबानी । तिन को पाए सुने भेद मुसलमानी ॥
सरब रुहां पछाने । जात इलाही सब में जाने ॥
हिर्स खुद पर पढ़ तकबीर साहिब राजी की सुन तीर ॥
सब कुछ देखे तिस की रजा । साहिब राजी तब मिटे कजा ॥
साहेब, लावजूद है, ला मज़हब जलाल ।
"मंगत" कहे सुन काजिया, गैब दा सही अहवाल ॥
सब फना नही रहे कायम । लाफनाह सो जात है दायम ।
सब के अन्दर तिस का जलाल । सब कुछ देख तू उसका कमाल ॥
सब को करे जिन्दा जावेद । जात इलाही का नहीं पाए कोई भेद ।
पढ़ तू साचा नाम क्रीम । सब पर फज़ल करे जो रहीम ॥
कांया काबा बिच अब्दी नूर । गैब सदा बाजे बेहद तूर ॥
सो ही इल्हाम कलाम रबानी । तिस को बूझ छाड़ तसव्वर फ़ानी ॥
हक़ नाहक की करे पहचान । हक़ को खाए सो साचा मुसलमान ॥
कुफ़र शैतान से तोबा पढ़े । राहत रंज में एक चित धरे ॥
हिर्स खुदी तथा गुस्सा और बिकार । हक़ नमाज पढ़े करे तिन का शिकार ।
हिर्स फेल उमीद, तीनो से पाए जो जीत ।
"मंगत" कहे सुन काजिया, सो मोमन पाय जात पुनीत ॥

साचा साहिब एक है और कुल फ़नाह ।
 पकड़ो दामन तिस का जो शाहों का शाह ॥
 विच रजाई होए नित चालो । तजो कज़ा मन कुकर को गालो ॥
 देह मस्जिद प्राण मुसल्ला । तिस पर बैठ कर याद तू अल्लाह ॥
 आवे जावे नफ़स की धार । लो तरीकत मुर्शद उरबार ।
 शौक यकीन का पहन पैराएं । सिदक का तौक ले दिल में लटकाएं ॥
 तख्त चढ़े नौरोज को खोले । गैब सदा रंग रंग में बोले ॥
 मिटे अंधेरा धर चानन होए । मुर्शद पाक मिल दूई दिल खोए ।
 गैब बाजार चांदनी चौक । तख्त ब्राजे साहिब अनोख ॥
 लख आपताब महताब चमकार । उठ के देख तू साहिब दीदार ॥
 जिस देखा सो होय खामोश । जाम बेखुदी पी होए मदहोश ॥
 अपने नूर संग मिल हुआ नूर । दोहे जहाने देखे इक हजूर ।
 बड़ी सिफ़्त सादक की जान । कुफ़र त्याग करी साहिब पहचान ॥
 नासूत, मलकूत, जबरूत बिकार । पाई लाहूत ऊँची सरकार ॥
 अनहद नाद बाजन्त तूर । साचे नाम में रहे मखमूर ॥
 दीन दुनी दोनों ले जीत । इक ज़ात इलाही रखे परीत ॥
 चार दिसा में सजदा देवे । ज़ात हकानी की सिफ़्त को लेवे ॥
 घर में बाजत नौबतां, मृदंग सुरंग नफीर ।
 "मंगत" कहे सुन काज़िया, सच घर बसे फ़कीर ॥
 मिल मुर्शद पा इल्म हकानी । कोह तूर चढ़न की सुनी कहानी ॥
 आवे जाये नफ़स की धार । शाहरग माही वास गुज़ार ॥
 दम दम साहिब नाम करो याद । गैबी खिड़की खोल साहिब सुने फरयाद ॥

उठत बैठत कर याद इलाही । छोड़ तसव्वर झूट फनाही ॥
 माल मुल्क और हाथी घोड़ । वक्त आखीर जाये सब छोड़ ॥
 कूड़ी दुनिया संग हिर्स लगाई । सर पर बजे रबाब फनाही ॥
 कूचो-कूच नहीं मुकाम । राजा राणा मीर गुलाम ॥
 न कोई रहया न रहने पाये । जलवा कुद्रत साहेब दिखलाये ॥
 हारूं कारूं सिकन्दर दारा । खिल्जी गौर नहीं मुगल दा खाड़ा ॥
 पीर पैगम्बर वली दरवेश । आवे जावें पेश दर पेश ॥
 यह दुनिया है सराए फानी । साहेब विसार पाए दुख की खानी ॥
 जोर जुल्म यहा बहुत कमाए । होए नमाना खाक समाए ।
 जिस दर बाजत नौबत हजार । उस दर बोलें उल्लू कराल ॥
 तख्त ताज और दुनिया माल । ओढ़क वार पूछे इजराईल अहवाल ॥
 किस कारण तू जग में आया । बन्दगी छोड़ के बद अमल कमाया ॥
 हयाती छोड़ फनाह में जाए । अमल नबेड़ा उस साची दरगाहे ॥
 साचा मुर्शद मिल पाओ हकानी भेद । मिले हयाती ले बन्दगी अबद जावेद ॥
 दीन गरीबी दिल लावे मूल । कुफ़र कफ़ार की गफ़लत जाए भूल ॥
 कल्मा साच का साबन ले धोए । अमरी जात विच दिल रोशन होए ॥
 इस फानी जहा में जो आए, सो होए दिलगीर ।
 "मंगत" कहे सुन काजिया, बिन बन्दगी न जाए तकसीर ॥
 सो मोमन पाए मालिक का नूर । जो जाए बैठे ऊपर कोहे तूर ॥
 चौदा तबक के परले पार । देख कादर का चमतकार ॥
 नौ लख तारा कोट आफताब । चमके बिजली कोट महताब ॥

असल तबक वहां होए परकास । राग छतीसो बानी बिलास ॥
 देख साहिब मन होई खुशहाली । पाई हयाती गई फनाह ख्याली ॥
 सच्चे साहेब का सुनिये फरमान । खालिक बैठा लाए दीवान ॥
 बारम्बार करे तहकीक । हम कलाम होए संग सच्चे रफ़ीक ॥
 साहेब रज़ा मन तन में लाए । हिकमत हुज्जत उमीद चुकाए ॥
 जिस घर में साहेब मेला होई । छूत की ज़ात नहीं देखी दूई ॥
 शरह शरीयत नहीं दोज़ख जन्नत । वहां नहीं ज़नार न देखी सुन्नत ॥
 एक साहेब सच्चा और सभी हराम । मालिक सच्चे की सुनी सच कलाम ॥
 आशिक हो के कुफ़र को छोड़े । नफ़स कमज़ात का सर तोड़े ॥
 मिल मुर्शिद तरीकत पाए । हकीकत खोज मार्फत दिखलाए ॥
 गैब बाज़ार निदा रब्बानी । सादक हो के सुन रमज़ हक्कानी ॥
 ख्वाहिश गज़ब का देवे दारूद । तरक तअस्सुब सुने साहेब फरमूद ॥
 ऐसी कुरबानी देवे जोए । राह इसलामी पावे जन सोए ॥
 तरको तरक मचावे शोर । चौदा तब्क जंजीरी तोड़ ॥
 होए आजाद पीवे साहेब नाम । बेहिर्स होए पाए सिफ़यत इल्हाम ॥
 तन मन की खुदी त्यागे । सो मोमन मालिक घर जागे ॥
 बन्दा सोई जो करे बन्दगी, पावे साहिब की ज़ात ।
 "मंगत" कहे सुन काज़िया, यह साचा राहे निजात ॥

(ख) अमृत उपदेशों से

वाहिद ज़ाते आला (एक ही महान सत्ता)

वाहद एक ही ज़ात का ज़हूर (आविर्भाव) यह दुनिया है । वक्त-वक्त पर महापुरुष तबदील होने वाली दुनिया में आकर अपनी अमली जिन्दगी के जरिए (द्वारा) भूले हुए लोगों को सच्चाई का रास्ता बता जाया करते हैं ।

उनके फरमाए हुए नक असूल ही बाद में रवाज की सूरत अख्तियार कर लिया करते है। जिस्म के ज़ाहरी भेसों को धारण करने में इन्सान की निजात नहीं है। कल्ब (अभ्यंतर) की सफाई के वास्ते जनेऊ पहन्ना धोती लगाना, रुण्ड-मुण्ड रहना, केस जटा धारण करना और भी कई किस्म के भेस बना कर फिरना धर्म या ईमान नहीं है। राहते अब्दी (शाश्वत शान्ति) तो उन (महापुरुषों) के सत् असूलों को धारण करने में है। तमाम मज़ाहब के राहनुमा दो रास्तों की हिदायत करते आए है। एक लागर्ज़ फेल यानी निष्काम कर्म का दूसरी ज़ाते आला (महान सत्ता) का तस्वुर (ख्याल)। खुदी से निजात पाने के वास्ते यह ही प्रभु के प्यारों का रास्ता है। जब खुदी (अहंकार) रयाजत (अभ्यास) और तप करते करते खत्म हो जाते हैं, तब आप ही खुदा यानी मालिक बन जाता है। जैसे-

मन तू शुदम तू मन शुदी - मन तन शुदम तू जां शुदी
ता कस न गोयद बाद अज़ी - मन दीगरम तू दीगरी
मतलब: तू मैं तू हो गया, तू मैं हो गया, मैं तन हुआ तू जान हुई।
ताकि बाद में यह न कोई कहें, तू और है मैं और हूं।

खुदा आप सबको यकीने पाक (सत् विश्वास) बक्शे और ईमान देवे । "

खुदा प्रस्ती (ईश्वर पूजा)

‘अपने आप को अलग समझना या तअस्सुब (धर्माधता) रखना ही कुफ़र है। सब में उस ज़ाते कमाल (सत्पुरुष) का मंजर (दृश्य) है। खुदा प्रस्ती यही है कि उस जाते-पाक (परमेश्वर) को हर शैय (वस्तु) में देखे और हर जगह उसे मौजूद समझे। सिर्फ मन्दिर-मस्जिद मे ही वोह कैद नहीं है। यह तो सिर्फ इबादत (प्रार्थना) की जगहें है। ग्रन्थ वेद, अजील, कुरान पढ़ने का मतलब यह है कि अपने अन्दर सच्चाई और सफाई आवे। नफ़रत और रजश (घृणा एव द्वेष) के जजबा (भाव) से पाक हो कर अक्ले-सलीम (विवेक)

से बाहदुल्शरीक (केवल एक) की पहचान करो। मज़हब की फांसी से निजात पाकर लामहदूद (असीम) ताकत को समझे, जिस ताकत से सब जानवर आदमी से च्यूंटी तक चलते फिरते नजर आ रहे हैं। उसका ज़हूर सब दुनिया को जाने, अपनी खुदी को खत्म करके। तब इस जिस्म में मौजूद जान का पता लगे और खलासी हो।"

वहदत प्रस्ती (एक ईश्वर की उपासना)

'हर एक (मनुष्य) हिर्स, फेल, उमीद (वासना कर्म और आशा) इन तीन बातों से गिरफ्तार, यानी फंसा हुआ है। इस कैद से छूटने के वास्ते खुदा की प्रस्तिश (ईश्वर भक्ति) है। जब तक जिस्म के बनाओ सिंगार में फंसा हुआ है, तब तक ख्वाहशात (इच्छाओं) में जकड़ा हुआ है। वहदत प्रस्त नहीं हो सकता। यह बुत प्रस्त (मूर्ति पूजक) ही बना रहता है। जब रूह-जिन्दगी यानी 'जान' की तलाश में शुरू होता है, तब वहदत प्रस्त कहलाता है - चाहे हिन्दु हो या मुसलमान चाहे पारसी। हिर्स करके फेल (कर्म) करता है। फेल के नतीजे फायदा और नुकसान, खुशी-गमी में हर वक्त परेशान रहता है। जब तक हिर्स उठ रही है, कभी वहदत प्रस्त नहीं बन सकता। नबी, पैगम्बर, अवतारों के हुक्म की तामील में ही सच्ची खुशी भरी होती है। उनके शरीर या जिस्म की प्रस्तिश (पूजा) लाभदायक नहीं..'

असली मूर्ति पूजा

" साकार की पूजा यह है-जीती जागती जो मूर्तियां है, हर जीव मात्र की तन-मन से सेवा कर किसी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न दो। कोई भूखा है, उसकी अन्न, जल से सेवा करो, नंगा है कपड़ा दे दो और कोई दुखी अनाथ है, उसकी जो सेवा बन सके, करो। जीभ के स्वाद के वास्ते किसी जीव का वध न करो जान जब ऐसा अम्ल करोगे, तब तो असली मूर्ति का पुजारी जान.."

ईश्वर क्या है ?

"सन्तों ने खोज करके बतलाया कि जीवन की एक दशा या स्थिति का नाम ईश्वर है। जब मुर्शिद कामिल (पूर्ण गुरु) जिज्ञासु को अधिकारी जान कर अंदर का रास्ता बतलाता है, जिस पर चलकर उस मुकाम पर पहुंचता

है जहां दुःख-सुख, हानि-लाभ, जन्म-मरण, भूख-प्यास, मान-अपमान वगैरह (इत्यादि) द्वन्दों से ऊपर उठ जाता है, जहां बुद्धि तक भी नहीं जाती, बल्कि लय को प्राप्त हो जाती है..जहां आनन्द की बाढ़ आ जाती है हर्दें (सीमाएं) जहां टूट जाती है.. जहां शरीर शरीर नहीं रहता.. तमाम सब कुछ सत्स्वरूप हो जाता है। इस मुकाम को या इस हालत को सन्तों ने ईश्वर, अल्लाह, खुदा, वाहगुरू, सत पद, शिव पद, निर्वाण, बोध वगैरह अनेक नामों से मौसूम किया (पुकारा) है।"

ईश्वर के प्यारों का मिशन

"फकीरों की निगाह में सब लोग यकसां (बराबर) है, दूसरों की खिदमत (सेवा) करने वाले बनो, अपने सुख को हासिल करने की तुम लोग कोशिश न करो, बल्कि दूसरों को सुख देने की कोशिश दर कोशिश करो। जितने भी ईश्वर के प्यारे दुनिया में आये हैं, सब का मिशन एक ही था। वे प्रभु-प्रेम में गलतान (लीन) रहे। उनके पैरोकारों (अनुयाइयों) ने कई मत बनाए। विचार करो कि दूसरे के साथ नफरत (घृणा) करना यह कितनी जहालत (मूढ़ता) है।"

धर्म और शान्ति

"धर्म किसको कहते है पवित्र धारणा को जिसको ग्रहण करके मन उपाधियों से निकल कर ईश्वर या कुदरते-कामला की तरफ जावे। मानुष जन्म में ही परम शान्ति को पाया जा सकता है और इसका एक मात्र साधन है तन मन धन का त्याग।"

धन का त्याग

"धन के बगैर जीवन का निर्वाह होना कठिन है और धन का ज्यादा होना भी जीव को क्लेश देने वाला है। इसलिए महापुरुषों ने कल्याण का मार्ग यह तजवीज़ फरमाया कि जो सम्पत्ति अपनी पवित्र कमाई से प्राप्त होवे, उसका कुछ हिस्सा अपनी जीविका में सर्फ (खर्च) करें और कुछ हिस्सा निष्काम भाव से अधिकारी जीवों की सेवा में लगाये। जो ऐसा निश्चय करने वाला पुरुष है,

वह नाजायज़ (अनुचित) तरीका से कभी भी धन के मोह में आसक्त होवे | यह साधन तमाम पापों को नाश करने वाला है।"

तन का त्याग

"जो इस रीति को धारण करता है। वह अपने जीवन को परम शान्ति की तरफ ले जाता है अर्थात् जो दूसरों के दुखों को मिटाने के लिए अपने शारीरिक सुखों का त्याग करता है, वही परम भगत, भाग्यदान पुरुष शरीर के तमाम विकारों से छूट कर आत्म निश्चय को प्राप्त होता है।"

मन का त्याग

"यह है कि मिथ्या संकल्प विकल्प जो अन्तःकरण में उदय होते हैं, उनके नतीजे को प्रभु इच्छया में समर्पण करके हर वक्त अपने आप को ईश्वर परायण बनाना और सत्-पुरुषार्थ धारण करके हर एक जीव को सुख देना, अपना धर्म जाने।"

"ऐसी भावना जिस पुरुष को प्राप्त हुई है यानी जो अपने तन, मन, धन की आसक्ति को त्याग करके अपने आपको हर घड़ी, हर लम्हा प्रभु परायण बनाता है, वह ही परम ज्ञानी आत्म आनन्द अर्थात् अविनाशी सुख को पाता है जिस सुख की वास्तव में चाहना हर एक जीव को हर वक्त लगी रहती है।"

धर्म क्या है ?

'धर्म वह धारणा है जिससे मन को शान्ति मिले। पाप क्या है ? पाप वह कर्म है जिससे मन जले। जीव को अख्तियार है खवाहे ठण्डक हासिल करे खवाहे जलन । धर्म ठण्डा करेगा नेक नामी होगी। पाप जलावेगा और बदनामी होगी । महापुरुषों ने तजर्बा किया और बतलाया कि धर्म से कल्याण होता है और पाप का असर बुरा होता है।

जीवन का उच्च लक्ष्य

बुद्धि यानी रूह खुदी के ज़ेर असर (वशीभूत) हो कर महसूसत (भावनाओं) ख्वाहशात (इच्छाओं) और लज्जात (जीभा के और दूसरे स्वादों) की कैद में आकर अच्छे या बुरे फेल (कर्म) करती है जिसका नतीजा

खुशी या गमी देखती है, यह ही तमाशगाहे आलम (सांसारिक रंगमंच) है। जब तक खुदी से बालातर (अमर) होकर जाते अब्दी (अविनाशी पुरुष) की पहचान नहीं कर लेती, तब तक रूह को क्याम नसीब (निश्चलता प्राप्त) नहीं होता.. वजूद की नापायदारी (शरीर की नशवरता) समझने से लज्जतों से अबूरी हासिल होती है। तमाम वजूदों के फेलों का नतीजा मालिके कुल (ईश्वर) की रजा में देखता और मालिक के नाम की विरद करनी (सिमरण करना) खाहशात से अबूरी हासिल करने का इलाज है और बिल्कुल फनाह फिल्ला की हालत को हासिल करके मालिक कुल की ज्ञात को गैर तसब्बर (निर्विकल्प) हो करके मुशाहदा अपने बातन (अन्दर) में करना महसूसात से आजादी हासिल करना है। इसी हालत को राहते अब्दी (शाश्वत शान्ति), निजात, वसाले हक (सम पद अवस्था) और निर्वाण शान्ति कह कर आरफों (ज्ञानियों) ने बयान किया है। यह हालत ही असली करार है और रंजोगम से बालातर है। इस जावेद (अविनाशी) जिन्दगी की तहकीकात ही इन्सानी जिन्दगी का आला मकसद (जीवन का परम लक्ष्य) है। अच्छी तरह से विचार कर लेवें। "

मादे और रूहानियत की तहकीकात (भौतिकवाद और अध्यात्मवाद की खोज)

"मादे यानी तत्वों की तहकीकात अगर गहरी से गहरी भी की जाए, असली तसल्ली नहीं आती, जब तक कि रूहानी जिन्दगी यानी जीवन शक्ति की तहकीकात न की जावे, जो असली स्वरूप समता का है ..।"

"किसी कौम और मुल्क की दायमी (रहने वाली) तरक्की महज मानसिक खाहिशात यानी जरूरयाते जिन्दगी को बढ़ाने से कायम नहीं रहती, जब तक त्याग स्वरूप रूहानी जिन्दगी की साथ-साथ तहकीकात न की जावे। जरूरयाते जिन्दगी की ज्यादाती अक्सर तबाही कर देती है। यह दृढ़ निश्चय होना चाहिए।

नुमायशी जीवन

"इस जमाने में जिसे रोशन का जमाना कहा जाता है, इसमें बेशक मादी (भौतिक) जागृति आ गई है। वे लोग यह जान गए हैं कि रहन-सहन किस तरह से अच्छा हो सकता है। वे ऐसा जान गये हैं कि खाओ, पियो और मौज करो। मगर इसके नतीजे से गाफिल (अनभिज्ञ) है, वे नहीं जानते कि नुमायशी (दिखावे वाले) जीवन से सिवाए अशान्ति बेचैनी के कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। "

एक ईश्वर भूलने से

"एक ईश्वर को भूल कर जीव अनेक तरह की चिन्ता, फिक्र में गिरफ्तार हो जाता है। ईश्वर पर जब यकीन विश्वास ही नहीं, मन कैसे ठहरे। मन को चंचल करने के लाखों सामान नित्य से नित्य बन रहे हैं। मगर संसार की कोई वस्तु भी इसे तसल्ली नहीं दे सकती.. अपनी जरूरत को कम करो, सादगी धारण करो.. जब मर्यादा धारण करोगे, खाने पीने और लिबास को सादा करोगे, चेष्टा कम होगी। सत् सिमरण करने से मन शान्त होगा। संसार की चमक-दमक को देख कर जो मोहित हो रहे हैं, वे मूर्ख जीव है जीव को चाहिए कि अपने अन्दर जो झगड़ा लगा हुआ है, उसको निपटाये, अपने अन्तःकरण को शुद्ध करे। इस देह के अन्दर जो जीवन शक्ति आत्मा है। उसको जानने का यत्न करे 1"

कर्म कैसे खत्म होता है ?

"मन दिन रात किसी वक्त भी नचिल्ला नहीं रहता। कुछ न कुछ करता ही रहता है, जब तक इसका नाचना कूदना बन्द नहीं होता, इसकी गति नहीं होती। यह नाचना कूदना तब बन्द होता है जब यह आत्म रूपी समुन्दर में मिलेगा। जैसे दरिया बह रहा है, उसके आगे बन्ध बांध दिया जावे, वह उसे तोड़ देगा। उसके आगे पहाड़ खड़े कर दिये जायें, वह उन्हें भी तोड़ कर निकल जावेगा। लेकिन जब समुन्दर से मिल जावेगा शान्त हो जावेगा। जीव

की कामना कल्पना खत्म नहीं होती, जब तक परमेश्वर को प्राप्त न होगा। इसका जोर-शोर खत्म नहीं होगा। जब परमेश्वर पूर्ण रूप इसको मिल जावेगा, तब इसको शान्ति होगी । "

कर्तव्य परायणता

'सही फरायज (कर्तव्यों) को सरइन्जाम देना (पूरा करना) ही कामयाब जिन्दगी है। अपने फरायज में जो हर वक्त स्वतन्त्र है, वही शूरवीर है। स्वार्थ की बढ़ती हुई अग्नि को परमार्थ के जल से जो सींचत करता है, वही परम गति को प्राप्त होता है। इस संसार में सब जीव यत्न-प्रयत्न करते हुए अपना-अपना सफर खत्म करते हैं। मगर जिनका यत्न परमार्थ अनुकूल है, उनका जीवन दुर्लभ है। जहां तक कोशिश हो अपने को सत् के आधारी बनाना चाहिए। इसी में परम कल्याण है।

बच्चों के बारे में

जैसे बड़े बुजुर्ग चलेंगे, उनको देख कर ही छोटे चलेंगे। खास कर माताओं के हाथ में बच्चों का जीवन होता है। जिस तरह वे चलेंगी, वैसे ही उनके बच्चों का जीवन बनेगा। सफाई केवल शरीर और कपड़ों की ही नहीं होनी चाहिए, बल्कि मानसिक पवित्रता के लिए अच्छी आदतें उन्हें डालनी चाहिए पढ़ने चाहिए। किस्से कहानियां पढ़ने के बजाए आला (श्रेष्ठ) इतिहास बच्चों को गिरावट की तरफ ले जाने वाला सबक कभी नहीं देना चाहिए। साथ-साथ प्रकाशक शक्ति को भी जानने का सबक देते रहना चाहिए .."

दूई (द्वैत) का त्याग

"खुदा के हुक्म से जब से इस दुनिया का निजाम शुरू हुआ है, रुहें यानी जीव खाकी जिस्म को धार कर आ और जा रही है। जब तक जिस्म है। तब तक हमारी अपनी-अपनी दुनिया कायम है। हर एक इन खाकी वजूद में हैरान व परेशान है। इस हैरानी और परेशानी का इलाज करने वाले मशरक व मगरब (पूरब व पश्चिम) मे होते चले आये है और आगे भी आते

रहेंगे। उन के नकशे कदम (पद चिन्हों पर चल कर ही हज़ारों रूहों ने निजात अब्दी, लाफानी (अविनाशी) खुशी, दिल की तसकीन हासिल की ...

... खास हुकमे खुदाई (ईश्वरीय आदेश) सुनाने वाली (रूहें) जब-जब भी दुनिया में आई, उनको बड़ी-बड़ी तकलीफात का सामना करना पड़ा। लेकिन उनके सिदके कामिल (दृढ़ विश्वास) ने सब को गरवीदा बना लिया (मोहित कर लिया) किसी भी मुतबर्क किताब (पवित्र ग्रंथ) में ऐसा नहीं लिखा कि अपने नफ़स के वास्ते रूहों को बेजा तकलीफ दी जावे। इनमें सही खिदमत (सेवा) का ही एलान किया हुआ है। परमेश्वर, रब्ब या खुदा सिर्फ हिन्दुओं या मुसलमानों का वाहद (अकेला) खरीदा हुआ नहीं। हिन्दू इसके मालिक नहीं या और किसी की मलकियत नहीं। उस जाते-आला (परम सत्ता) से ही सब रोशन हो रहे हैं। उस जाते आला से जो मुनकर हुआ है, वह ही काफिर है। मालिक के नूर को वही मोमन या तालिब (जिज्ञासु) समझा सकता है जिसकी निगाह मे दूई यानी गैरियत नहीं है। जो सब चरिन्द, परिन्द, इन्सान हैवान में मालिक की जात को देखता है, वह अपने पीर पैगम्बरों को मानने वाला है। हर एक के साथ मुहब्बत प्रेम से बरताव करने वाला है, जिस हाल में खुदा रखे, उसमें रहने वाला है, यानी 'राजी बर रजा' होकर धन-दौलत, दिल और जिस्म सब खुदा की चीज़ जानने वाला है, सब कुछ उसका है तो फिर उस पर गरूर (अभिमान) करना कि ये चीज़ें मेरी हैं, वे ही मूर्ख यानी काफ़र है। अक्ल की आंख से देखना चाहिए। इस दुनिया में मेरी ऐसी कौन सी चीज़ है जो खुदा के नाम पर उसे दे सकते हैं। नफ़स की खातिर मेहर को छोड़ कर कैहर को अपनाना ..कहां की अक्लमन्दी है। यह मेरी हिर्स का सारा तमाशा है, जिसका नतीजा खुशी और गमी है। तकबीर पढ़नी है तो हिर्स और खुदी पर पढ़। जिस करके खुदा (साहेब) राजी हो। दुनिया का सही लाभ यानी नफा मिले। जो नित्य ही रज़ारे अल्ला (ईश्वर की मर्जी) में मुस्तगर्क (लीन) रहने वाले हैं, उसकी गफलत खत्म हो जाया करती है। जो खुदी की हालत में रहने वाले हैं, वे कभी भी दिल की राहत को न पा सकेंगे।

खुदा आप सब को ईमान, सब और आजजी (विनम्रता) बख्शें।"

क्षणिक सुख और शाश्वत दुःख

"इस भयानक समय जिसमें तकरीबन (लगभग) सारे ब्रह्माण्ड में अशान्ति ही अशान्ति छाई हुई है और नित्य ही विशाल रूप में एक दूसरे के विनाश - उपद्रव प्रगट हो रहे हैं, इसका कारण महज वासना का फैलाव है और वासना की अधिकता केवल भोगमयी जीवन से प्रगट होती है और भोगमयी जीवन सत् विवेक के हीन होने ही जकड़ता है.. "

इस संसार की जीवन यात्रा में तो सब प्राणि मात्र अपनी जीवन क्रिया को अधिक विस्तारपूर्वक फैला कर आरजी (क्षणिक) खुशी और दायमी (शाश्वत) रंज को प्राप्त करके अपने-आप में हर वक्त दुखी रहते हैं..

संसार की गर्दिश को सही विचार करके हर वक्त, अपने आप को निर्मल शान्ति के मार्ग पर दृढ़ करना चाहिए.."

उपदेशों से चुने कुछ अनमोल मोती

- "ईश्वर सत् है। उसका आसरा परम सुख देने वाला है।
- "ईश्वर विश्वासी नित्य तृप्त रहता है।
- "खुदा क्या है ? तेरे वजूद के अन्दर लावजूद शेय (वस्तु)। तेरे इस मकान के अन्दर लामकान ताकत।
- "ईश्वर कहीं दूर नहीं। हर जगह मौजूद है। शाहरग से नजदीक है।"
- "जिन्दगी में जिन्दगी की पहचान करो।"
- "जिसने अपने अन्दर खोज शुरू कर रखी है, वह एक दिन जरूर मंजिले मकसूद (निश्चित लक्ष्य) को पायेगा। चलने वाले के वास्ते कोई साहिल (तट) दूर नहीं रहता।
- "जुस्तजू जारी रखो। जो चलता है, पहुंच जाता है। जो खोजता है, पा लेता है।
- "मालिक के दरबार में चालाकी चतुराई नहीं चलती।"
- "सादा सुभाव बनाओ। छल कपट से रहित रहो।

- "जब कुदरत (प्रकृति) मे तफरीक (भेद-भाव) नहीं तो तू तफरीक क्यों करता है? तंगदिली (संकुचित विचारधारा) तुझे किसी मेराज़ (शिखर) पर नहीं पहुंचने देगी।
- "सत्पुरुषों की वाणियां चित्त के कपाट खोलने वाली होती है।
- "किसी भी मज़हब (धर्म) के बुजुर्ग की तौहीन (अपमान) नहीं करनी चाहिए।"
- "अल्लाह के बन्दों का मोजज़ा (करामात) इबादत, बन्दगी में है। फ़कीर जान-बूझ कर करामात नहीं दिखाते।"
- "जब तक इन्सान पहले सच्चा इन्सान नहीं बनता, ईश्वर का मिलना मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुमकिन (असंभव) है। महज़ धार्मिक किताबें पढ़ते रहना जिन्दगी का मकसद नहीं है।"
- "खाली ज्ञान चर्चा से काम नहीं बनता, करनी करो।"
- "लिखो पढ़ो थोड़ा, गुढ़ो ज्यादा।"
- "यह जीव आसरे ढूंढ़ता रहता है। चाहता है कि इसकी जगह मौलवी, पंडित, भाई पाठ कर दे। झूठ कपट जो यह दिन-रात करता रहता है, उससे इसे कोई छुड़ा नहीं सकता है।"
- "जीव अपने संस्कारों में कमी बेशी कर सकता है, अपनी कुव्वले इरादी (दृढ़ निश्चय) को मजबूत करके।"
- "जीव की असली रास (पूंजी) नेक एमाली (शुभ कर्म) है।
- "आलम बाअमल (विद्वान कर्तव्य परायण) हो, तब ही रंग लग सकता है।"
- "पाखण्ड से बचो।"
- "आहार-व्यवहार की पवित्रता पर खास ध्यान दे कर चलोगे, तो कभी दुःख नहीं देखोगे।"
- "जिस्म की सफाई से ज्यादा दिल (मन) की सफाई करो।"
- "निर्भयता ही असली जीवन है।"
- "दूसरों के मलीन कर्मों को विचार करने से यह मन आज्ञादी पकड़ लेता है, और आप भी उन कर्मों को करने लग जाता है।"
- "सारी धरती पर से काटें कोई दूर नहीं कर सकता। अपने पावो में जूता डाल लेने से कांटे होते हुए भी नहीं चुभते।"

- "सिंमरन करने वाले से सेवा और सेवा करने वाले से सिंमरन बन सकता है।" दोनों लाज़म मलजुम (अन्योन्य आश्रित) हैं।"
- "सेवा करवाने की कभी चित्त में स्वाहिश न रखो । हमेशा सेवा करने का चाव हमारा बना रहे।"
- "अपनी तरफ से हर जीव मात्र मे प्रेम रखो। तन मन से जितनी सेवा बन सके, करो दो घड़ी मालिक की याद में समय दिया करो।"
- "दरअसल (वास्तव में) मन का सोचना भी कर्म है। बयान करना भी कर्म है । स्थूल रूप में करना भी कर्म है। जीव एक पलक के लिए भी कर्म से खाली नहीं रह सकते ।"
- "जीव की अशान्ति का कारण एक वासना ही है।"
- "मन की भटकना ही संसार है।"
- "संसार देखो, लेकिन चित्त मत किसी चीज को दो ।"
- "संसार रूपी बाग को देखते है, मगर बनाने वाले का विचार कोई विरला ही करता है।"
- "सांसारिक धन, परिवार, महल अटारिया वगैरह हमेशा रहने वाला सुख नहीं दे सकते । इसलिए जो जीव इनको प्राप्त करने पर इनको प्रभु की दात समझता है। उसके लोग और मोह आप ही कम हो जाते है।"
- "रब्ब जंगलो मे नहीं मिलता। रब तो कर्तव्य पूरे करने से मिलता है।"
- "ऐसी दृढ़ता धारण करो कि आत्मा परमात्मा को इस जनम में जानकर ही छोड़ूंगा।"
- "ऐसा मन में पक्का इरादा बनाओ कि प्रभो इस जीवन मे तेरे स्वरूप में मिलना है।"
- "पूरी अक्ल से पूरी ताकत से, पूरे इल्म से और पूरी कोशिश से अपने जीवन को अति निर्मल करने का यत्न धारण रखना और शरीर के अन्त समय के होने से पहले ही निर्भय अवस्था आत्म आनन्द को प्राप्त कर लेना ही मानुष जन्म की परम सफलता है।"
- "जिस प्रेम से संसार की तरफ दौड़ते हो, उससे दुगने प्रेम से दो घडी मालिक के चरणों में मन चित्त दे दो तो काम बन जाये।"
- "हे ईश्वर मेरे में ताकत दे जिससे तेरे अहकाम (आदेशों) को पूरा कर सकूँ ।"

- "शरीर के सुखों को मर्यादा के अन्दर रखो।"
- "तमाम फ़जूल हरकात से परहेज करें।"
- "जिस तरह अपने सुखों की चाहना करता है, उसी तरह दूसरों को सुख पहुँचाने वाला हो।"
- "शरीर के सुख नामुकम्मल (अपूर्ण) हैं।"
- "अपना स्वभाव ही सुख रूप है।"
- "यह शरीर एक महान कर्तव्य के लिए मिला है। भोग भोगने के लिए नहीं।"
- "जो मर्यादा का आहार-व्यवहार करता है, वही आराम में रहता है।"
- "इस संसार का सही चरित्र समझो। यह ही जीवन का मुद्दा और मकसद (लक्ष्य) है।"
- "जीवन का सत् आदर्श प्राप्त करना ही परम उच्चता है।"
- "जिसने पूर्ण परमेश्वर को समझ लिया, वह खुद भी पूर्ण हो गया।"
- "याद रखो जब तक ज़ाती (निजी) जीवन सदाचारी नहीं, समाज का भला नहीं होगा।"
- "देश की कल्याण चाहने वाले पहले अपना ज़ाती जीवन उत्पान करें।"
- "आखिर जीत सच्चाई की है।"
- "जीवन को कर्तव्यमयी बनाओ।"

(ग) प्रश्नोत्तर के रूप में

नोट - नीचे दिये गए प्रश्न-उत्तर ग्रन्थ "श्री समता विलास" के पहले अध्याय "परम निधान" से लिए गए हैं।

- दुनिया में ज़बरदस्त कोशिश क्या है ? धर्म के मार्ग पर चलना ।
- दुनिया में सच्चा मित्र कौन है ? अपनी नेक एमाली (अपने शुभ कर्म)
- दुनिया में हमेशा खुश कौन रहता है ? जो दूसरों का भला चाहता है ।
- सच्ची प्रसिद्धि (पूजा) किसे कहते हैं ? जिसमें अपनी गर्ज (स्वार्थ) न हो।
- वह कौन है जिसका कोई दुश्मन नहीं ? जो हर वक्त दूसरे की भलाई चाहता है ।
- नेकी किसको कहते हैं ? दूसरे का दुःख निवारण करना ।
- मानुष जिन्दगी की सार क्या है ? सत् स्वरूप की तलाश ।
- मौत से बड़ा अज़ाब (दुःख) क्या है ? अपनी गफलत का न विचार - करना ।
- जिन्दगी में मुर्दा कौन है ? जो खुदगर्ज है ।
- ईश्वर की शक्ति क्या है ? जो कुल कायनात (ब्रह्माण्ड) को - आनन्द दे रही है।
- धर्म क्या चीज़ है ? जिससे सच्ची खुशी मिले ।
- ज्ञान क्या चीज़ है ? जो हमेशा की जिन्दगी देवे यानी रोशनी देवे ।
- सबसे बड़ा पाप क्या है ? दूसरे को दुःख देना ।
- अहंकार क्या चीज़ है ? कर्म का कर्ता बनना ।
- ख्वाहिश कैसे पैदा होती है ? कमी के महसूस करने से ।
- ख्वाहिश से कैसे छूट सकते हैं ? पूर्ण पुरुष परमेश्वर की प्राप्ति से ।
- रोगी कौन है ? जो बेहूदा खाना खाए ।

जिज्ञासुओं के कुछ प्रश्नों के उत्तर

प्र० महाराज जी, बुद्धि का क्या काम है?

उ० प्रेमी, बुद्धि का काम है सोचना, निर्णय करना और खोज करना।

प्र० महाराज जी, बुद्धि की खुराक क्या है ?

उ० प्रेमी, बुद्धि विचार की खुराक खाती है। जिस तरह के विचार इसको खाने के लिए मिलेंगे, वैसा ही असली मानों (अर्थ) में बुद्धि का स्वरूप बन जायेगा। इस वास्ते सत्पुरुष हमेशा विचार की पवित्रता पर जोर देते हैं।

प्र० महाराज जी, इबादत (भक्ति) करने के लिए क्या-क्या जानना जरूरी है?

उ० प्रेमी जी, गौर (विचार) और यकसूई (एकाग्रता) के बगैर इबादत होनी मुश्किल है। सबसे पहले बुद्धि को एकाग्र करके जिसकी इबादत करते हैं, उसके वास्ते चित्त में तड़प होनी चाहिए। फिर गौर प्राप्त होगी। तब इबादत करने लायक बनोगे।

प्र० महाराज जी, ईश्वर क्या है ?

उ० प्रेमी कुल कायनात (ब्रह्माण्ड) में जो जीवन शक्ति चेतन सत्ता है, जिस करके हर शैय (वस्तु), हर वजूद (शरीर) जिन्दा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

प्र० स्वामी जी, क्या खुदा है ? या यों ही ढकोसलाबाजी है। अगर है तो कहां है?

उ० प्रेमी जी, खुदा जरूर है। अल्लाह, राम, ईश्वर जरूर है। कहीं भूल कर भी ऐसा ख्याल न करना कि वह नहीं है। जरा गौर से सुन। तेरे वजूद के अन्दर लावजूद क्या शैय है। तेरे इस मकान के अन्दर लामकान कौन ताकत है।

प्र० महाराज जी, ईश्वर-ईश्वर का नाम आप बार-बार लेते हैं और उसके बारे में आपके बयान और ही तरह के नजर आते हैं। महरबानी करके ईश्वर वाला मसला भी साफ करें?

उ० प्रेमी, तुम्हें बहुत थोड़े से मैं इसको साफ कर देते हैं। तसल्ली व नातसल्ली हालत से अबूर पाकर अपने आप के निज स्वरूप में स्थित होना ही ईश्वर है।

प्र० महाराज जी, ईश्वर विश्वास की कसौटी क्या है?

उ० प्रेमी, बड़ा गम्भीर इम्तहान (परीक्षा) है। ईश्वर विश्वास में पक्का इन्सान लाभ और हानि में एक बराबर रहता है। उसकी मर्जी में राजी बा-रजा रहने की आदत मुकम्मल और पक्की हो जाती है। ख्वाहे वह राज पर बैठे, वहां पर हर्षित नहीं होगा और गहरी से गहरी मुसीबतों को प्राप्त हो जावे तो वहां उसे दुःख नहीं होगा।

प्र० महाराज, गृहस्थ अच्छा है या फ़कीरी ?

उ० प्रेमी, दोनों रोना ही हैं। इबादते-इलाही (ईश्वर भक्ति) में ही आनन्द है।

प्र० महाराज जी, फायलियत और अनानियत किसे कहते हैं?

उ० प्रेमी, फायलियत, कर्तापन (मैं करने वाला) और अतानियत अहंकार (मैं और मेरा)

प्र० महाराज जी, फ़कीर के दरबार में आकर क्या भेंट देनी चाहिए ?

उ० प्रेमी, सच्चे फ़कीर दुनियावी चीजों को अहमियत नहीं देते। उनके ताल्लुकात (सम्बन्ध) रूहानी हुआ करते हैं। वे सब जीवों को आत्म स्वरूप करके ही समझते हैं। तुम्हारे अन्दर कोई बुराई या अवगुण है, कोई तपश तुम्हें तपा रही है, कोई कल्पना सता रही है तो उसको फ़कीर के दरबार में भेंट कर दो। यह ही भेंट फ़कीर तुम लोगों से चाहते हैं।

प्र० महाराज जी, फ़कीर का प्रशाद क्या है ?

उ० प्रेमी प्रशाद के बारे में भी यही बात है। जो कुछ भी ठण्डक, तसाली और नेक गुण अपनी जिन्दगी मुनव्वर (रोशन) बनाने के लिए सन्तों के संग से मिलें, उनको फ़कीर का प्रशाद जान कर ग्रहण करो

प्र० महाराज जी, संसार क्या है ?

उ० संसार शकूक (भ्रमों या शंकाओं) का समुन्दर है।

प्र० महाराज जी, जिन्दगी कैसे चलानी चाहिए ?

उ० प्रेमी जी, फ़र्ज वाली जिन्दगी बनाया। गर्ज वाली जिन्दगी न चलाओ ।

प्र० महाराज जी, असली आनन्द किसे कहते हैं?

उ० लाल जी, इसके लिए एक ही बात काफी है। एक तो शरीर और शरीर से मुतल्लक किसी भी चीज़ की चाहना अपने अन्दर न रखे यानी अपनी तमाम ख्वाहशात (इच्छाओं) से जब तू अबूर पा जावेगा, तेरे अपने आप को ही शक्ति मिल जावेगी और आनन्द के सही स्वरूप का तुझे पता चल जायेगा। यह बात बयान से बाहर की है।

प्र० आशिक तो मस्त रहता है जैसे मनसूर वगैरह और आप फरमाते हैं कि उदास रहता है। यह कैसे ?

उ० आत्म आनन्द करके तो वह मस्त रहता है। मगर शरीर से तथा दुनिया से उदास रहता है । बाकी पहचान करनी बड़ी मुशिकल है ।

प्र० ईश्वर को पाने का रास्ता एक है या अनेक ?

उ० सिद्धों का रास्ता एक है। मगर वकीलों का अनेक । सिद्ध जो हैं वे अपनी अनुभवी बात बतलाते हैं। मगर वकील दूसरों की वाणी सुनाकर वकालत करते हैं।

प्र० मनुष्य जीवन का मकसद (उद्देश्य) क्या है और क्यों है?

उ० मनुष्य जीवन का मकसद है निर्भय शान्ति यानी ऐसी खुशी जिसमें तबदीली का डर न हो। यह तब ही हासिल हो सकती है जब जिस्म की तहकीकात करके उसके अन्दर जो जीवन शक्ति है, उसे मालूम किया जावे। उसके मालूम हो जाने पर क्यों का जवाब खुद बखुद मिल जायेगा यानी पता लग जावेगा कि वह कहां से आया है और कहां उसने जाना है।

प्र० महाराज जी, शब्द की वजाहत (व्याख्या) फरमायें ?

उ० प्रेमी, शब्द ही जीवन शक्ति है। इसी को आत्मा, ब्रह्म नाद बगैरह नाम करके बयान किया गया है। शब्द आत्मा का स्वरूप है। वह अगोचर है।

प्र० कौन से कर्म बन्धन का मूजब (कारण) होते है और कौन से मुक्ति के ?

उ० गर्ज करके जो काम किया जाता है, वह बन्धन देता है और फ़र्ज करके किया हुआ काम आजादी देता है।

प्र० अगर हर एक मुक्ति में लग जाये तो दुनिया का कारोबार कैसे चले ?

उ० मुक्ति की चाहना न हर एक कर सकता है और न हर किसी को जरूरत है। किसी महापुरुष को ही मुक्ति की चाहना होती है, और कोई कोशिश सही करता है और कोई ही हासिल करता है। बाकी तमाम नुमायश है जब तक ख्वाहशाते नफसानी (विषय वासना) का गुलाम है, तब तक मुक्ति बहुत दूर है। हालते-बेख्वाहशी (निर्वास अवस्था) को मुक्ति कहते हैं, जो कोई ही हासिल कर सकता है।

प्र० महाराज जी, लाखों ही साधु सन्त और मठ है और सभी मुक्ति के दावेदार हैं। लेकिन सच्चे साधु की पहचान क्या है ?

उ० प्रेमी, खोराक, लिबास और रहन-सहन से पाखण्डी (बनावटी) और सन्त की पहचान हो जाती है। आजकल सच्चाई के नाम पर पाखण्डवाद (दिखावा) बहुत फैला हुआ है। और दुनिया अंधी होकर इन फरेबियों के जाल में फंसी हुई है।

प्र० महाराज जी, हमको आहार किस कद्र करना चाहिए, कोई उसके विषय में सहल तरीका बतायें ताकि अभ्यास में तरक्की हो ?

उ० प्रेमी, तुम खुद आहार-व्यवहार का प्रोग्राम बना सकते हो। जितना कम करना चाहो कर सकते हो। जितना इसे बढ़ाना चाहो, बढ़ा सकते हो। अगर अभ्यास करना है तो सूक्ष्म और युक्ति का आहार-व्यवहार करना पड़ेगा। भोजन इतना करो जिससे भूख की निवृत्ति हो जाए। थोड़ी भूख रखकर खाओ। ऐसा करने से प्राण सही चलते हैं। शारीरिक रोग भी कम होते हैं।

प्र० मौत का वक्त, तरीका और जगह मुर्कर (निश्चित) है। क्या जगह-जगह भाग जाने से इसमें कोई तबदीली हो सकती है?

उ० मौत का वक्त, तरीका और जगह कोई मुर्कर नहीं है। कर्म के मुताबिक (अनुसार) है। जब पाप का जोर उदय होता है, तब जरूरी हानि हो जाती है। बाहर की रक्षा काम नहीं करती। कर्मों के नतीजे से ही पता चल सकता है।

प्र० दुःख का कारण क्या है?

उ० शरीर और शरीर से सम्बन्धित पदार्थों में ममता ही दुःख का मूल कारण है।

प्र० महाराज जी, मूर्ति पूजा से क्या सबक (शिक्षा) मिलता है ?

उ० ईश्वर की याद में जिस समय बैठो, मूर्ति की तरह बेसुध हो जाओ।

प्र० महाराज जी सवारी जीवन क्या है?

उ० प्रेमी जी, सादा खाओ, सादा पहनों, मांस शराब का त्याग करो, छल कपट को छोड़ दो। ताश, जुआ और सिनेमा से दूर रहो। ख्यालात पवित्र बनाओ और कर्म शुद्ध करो। दूसरों की सेवा करो। हो सके तो दो घड़ी भगवान का सिमरन करो। यही सदाचारी जीवन है।

प्र० महाराज जी, सत्गुरु धारण करने से और उनके उपदेशों को सुनने से क्या मनुष्य का कल्याण हो जाता है ?

उ० नहीं प्रेमी, गुरु का काम सही रास्ता बतलाना है। आगे फिर उस रास्ता पर चलना पड़ेगा। तब सिद्धता और कल्याण होगी।

प्र०. महाराज जी, पुण्य कर्म, पाप कर्म और सत् कर्म की क्या पहचान है?

उ० प्रेमी जी, जिन कर्मों के करने से अपने अन्दर ठण्डक प्रतीत हो बशाशत (हर्ष) आवे खुशी हो, दिल में उदारता और उत्साह बढ़े और अचिन्ता हो, वे सब पुण्य कर्म ही जानो। जिन कर्मों करके भय, लोभ और खेद की प्राप्ति हो, वे पाप कर्म ही समझो। सिर्फ आत्मा ही सत् है। इसलिए जो कर्म उस को जानने के लिए किए जाते हैं, जिनमें और किसी किस्म का बन्धन नहीं होता, वे महापुरुषों ने सत्कर्म के नाम से पुकारे हैं।

प्र० महाराज जी, निष्काम कर्म किसे कहते हैं?

उ० गर्ज (स्वार्थ) करके जो काम किया जाता है, वह बन्धन देता है। और फर्ज समझ कर किया हुआ काम निष्काम कहलाता है और आजादी देता है।

प्र० महाराज जी, जनता का सुधार कैसे हो सकता है ?

उ० प्रेमी जी, पहले अपना सुधार करो। जनता का सुधार अपने-आप हो जावेगा। तुम्हारा आला इखलाक (ऊंचा चरित्र) दूसरों पर खुद बखुद असर डालेगा।

प्र० महाराज जी, मन बड़ा बिकराल है। इससे किसी तरह छुटकारा पाया जा सकता है ?

उ० प्रेमी, मन ही इसका मित्र और मन ही शत्रु है। चाहे इसे विषयों की तरफ लगा दो, चाहे करतार की तरफ यह एक समय में एक ही काम करेगा। दोनों हालतों में मन, इन्द्रियां, बुद्धि में ही रहती है। सिर्फ इनका स्वभाव बदल जाता है। स्वभाव बदलने के वास्ते वैराग्य और अभ्यास है। और कोई भी तरीका ऐसा नहीं जिसके द्वारा ठिकाने पर पहुंच सके। इस तरह विचार करते रहा करो, किसी ठिकाने पर पहुंचना है तो।

प्र० महाराज जी, आप अभी कह रहे थे कि सिदक और शौक से यह संसार सागर पार किया जा सकता है। सो बताएं कि सिदक और शौक किसे कहते हैं?

उ० हां प्रेमी, जरूर समझो। शौक तो ऐसा हो कि आत्म ज्ञान रूपी मैदान अब मारा कि मारा। अब देर नहीं है कि मैं उस अवस्था पर पहुंचूँ। इस तरह विश्वास भरा शौक हो। तथा सिदक हो कि मैं जरूर कामयाब हूंगा। कोई ताकत नहीं कि मेरी कामयाबी रोक सके। भेद थोड़ा ही है। दोनों करीब करीब एक ही बातें हैं।

प्र० महाराज जी, हमारी भाषा भी अलग होनी चाहिए जिस तरह गुरुमुखी में ग्रन्थ साहेब है। भगवान बुद्ध की वाणी विचार प्राकृत में है। कुरान शरीफ अर्बी में है। यह नई बाणी भी नये ढंग से होनी चाहिए और लिबास भी एक तरह ही प्रेमियों का होना चाहिए ?

उ० प्रेमी, और स्यापा डाल ! (और मुसीबत खड़ी कर दे) अच्छे विचार चाहे हिन्दी, उर्दू, गुरुमुखी, अर्बी, फारसी, अंग्रेजी जिस ज़बान में लिखे होते हैं, वहां से सबक हासिल कर लेने की कोशिश करो। हफों (शब्दों) को थोड़ा चाटना है। तुम ने सत् भाव धारण करने हैं। हर्फ (अक्षर लिपि) कल्याण करने वाले नहीं। एक लकीर को ही टेढ़ा-मेढ़ा करने से सब हरफ (शब्द) दुनिया के बने हैं। इनको जिधर मोड़ो, मुड़ जायेंगे इन तंग दायरों को आइन्दा आने वाली (भावी) नसलें नहीं कबूल करेंगी। नए हरफ बनने को दस मिनट नहीं लगते। अभी बन सकते हैं। बाद में ये छोटी छोटी बातें भयानक रूप धारण कर लेती हैं। फिर तुम्हारी समता फैल नहीं सकेगी

अलैहदगी (पृथकता) वाली बात सोचना भी गुनाह (पाप) है समता के प्लेटफार्म पर हर एक धर्म प्रचारक को समता धर्म पर बोलने की आजादी हो। अच्छी तरह धर्म के रूप को पखवाद (पक्षपात) से रहित हो कर विचार कर सके। ज़ाहर लिबास ख्वाह किसी किस्म का हो मगर इन (समता के) असूलों से कोई भी किसी वक्त भी इन्कार करने वाला नहीं हो सकता। कोई कैद बाहर वेष की नहीं रखी हर जगह हर वक्त समता साधन के धारण करने में शान्ति और सुख है। समता शास्त्र जो है, यह सब जीवों के वास्ते है। हर मत के लोग इसमें से अपनी बेहतरी के वास्ते विचार ले सकते हैं क्योंकि सब पाबन्दियों से मुबर्रा (रहित) है। प्रेमी अपने-आप को तंग दायरे में महदूद (सीमित) करने की कोशिश न करो।

प्र० महाराज जी, आप हिन्दी-संस्कृत वगैरह तो पढ़े नहीं। बड़े ऊंचे ऊंचे हिन्दी के शब्द उच्चारण करते हैं?

उ० प्रेमी, जब दिल की तस्ती साफ, निर्मल, शुद्ध हो जाती है, इल्म (विद्या) का भंडार सामने आ जाता है। अभी तो मुश्किल अलफाज़ (शब्द) बोलने की आज्ञा ही नहीं है। एक भाव को कई तरीकों से इस वास्ते समझाया जाता है कि परमार्थ का मार्ग छोटी बुद्धि वालों को समझ पड़ जाए।

प्र० महाराज जी, "योग मार्ग" को अच्छी तरह समझाने के लिए कुछ विचार प्रगट फरमाए, जिससे जिज्ञासु आसानी से उसे समझ सकें..

उ० प्रेमी, गुह्य भेद को खुली तरह खोला नहीं जा सकता। सौदा बहुत सस्ता न करो। वाणी में कई तरीके से इस का बयान हो चुका है। समझने वाले आप ही ढूंढते रहेंगे।

नोट - (महाराज जी अप्रैल, 1953 में केला घाट ठहरे थे। उन्होंने एक सुबह स्वयं कहा था- "इस जगह की यादगिरी (स्मृति) के वास्ते क्या प्रसंग लिखा जावे"? इस ऊपर दिये गए उत्तर के बाद केला घाट में ही महाराज जी ने "योग मार्ग बोध" अपने कर कमलों से लिखा जो अब ग्रन्थ श्री समता विलास का भाग है।)

आरती

तू पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल ।
नित पाऊँ शरणागती, सत चरण कँवल दयाल ॥
तू नित पतित उद्धार है, पून प्रभ जगदीश ।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश ॥
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत ।
तू दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत ॥
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश ।
सबको सरजनहार तू, आद पुरख अबनाश ॥
घट - घट व्यापक तू परमेश्वर, सरब जियाँ आधार ।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार ॥
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान ।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित ध्यान ॥
दीनानाथ दयाल तू, पल पल होत सहाये ।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए सहाये ॥
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वास ।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास ॥
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान ।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान ॥
तू साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड ।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द ॥

होवें दयाल हूँ सत परमेश्वर , देवें धीर अपार ।
निमख निमख सिमरण करूँ , चित चरण रहे आधार ॥
काया अन्तर परतख होवें , नाद रूप बिसमाद ।
पल पल कीजूँ आरती , तन मन तजूँ व्याध ॥
जग आवन सुफला होवे , तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ ।
अन्तरगत करूँ आरती , भव दुस्तर तर जाऊँ ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती , तेरे चरनी करे पुकार ।
'मंगत' माँगे दीनता , सत धर्म सुख सार ॥

समता मंगल

समता धरम हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश ।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ प्रकाश ॥
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार ।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जैकार ॥
सत कर्म सत निश्चय , निर्मल पाऊँ विचार ।
'मंगत' समता धार के , जीत चलो संसार ॥